04 - जब निराला ने कहा 'लिखने से कुछ नहीं होता!'

05 - हिंसक संघर्ष के पैरोकार यूथ आइकॉन अर्नेस्टो 'चे' ग्वेरा

A Daily News Magazine

इंदौर

रविवार, 14 जून, 2026

06 - वरिष्ठ साहित्यकार देवेन्द्र सिंह सिसौदिया को साहित्य अकादमी का प्रादेशिक...

07 - दर्शकों की पहली पसंद जासूसी के कथानक

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 11 अंक 252, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

जेठ की दोपहर

धूप साए की तरह फैल गई/
इन दरख़्तों की दुआ लेने से।
(-काशिफ़ हुसैन ग़ाएर)

फोटो - ऋतुराज बुड़ावनवाला

केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान बोले-

2013 में अस्थिरता, भ्रष्टाचार का माहौल था, गिनाईं मोदी सरकार की उपलब्धियां

भोपाल(नप्र)। केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा है कि लोकतंत्र में जन विश्वास हासिल करना भगवान के आशीर्वाद के तुल्य है। पिछले 12 साल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्थिरता का दौर दिया है। नए भारत में हमारे सैनिकों ने दुश्मन के घर में घुसकर उसकी छाती पर हमला बोलने का काम किया है। 79 साल में जिनके पास जो दायित्व रहा, सबने काम किया है लेकिन आने वाले 20 साल में भारत महाशक्ति बने, इसके लिए सभी नागरिकों की भागीदारी जरूरी है।

विकसित भारत संकल्प सम्मेलन में केंद्रीय मंत्री प्रधान ने कहा कि विकास, विश्वास और प्रगति का उत्सव मनाने के लिए हम एकत्र हुए हैं। कुशाभाऊ ठाकरे कन्वेंशन सेंटर एमपी की बीसवीं सदी और इक्कीसवीं सदी की शुरुआती व्यवस्था के लिए विधानसभा भवन के रूप में साक्षी है। 2013 में राजनीतिक अस्थिरता, भ्रष्टाचार का माहौल था।

बीजेपी की सरकार का नारा था कि सबका विकास होगा, मुट्?ठी भर लोगों का विकास नहीं होगा। सबके मन में विश्वास जगाया जाएगा और सबके लिए प्रयास किया जाएगा। विकास के

आधार पर किसी को वंचित नहीं किया गया। घर मिला, जल मिला, नल मिला तो सभी को मिला। लोकतंत्र में जनविश्वास हासिल करना भगवान के आशीर्वाद के तुल्य होता है।

वहीं, सीएम मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन मौन रहते थे, उनके दौर में सैनिकों के सर काटकर ले जाते थे।

केंद्रीय मंत्री बोले

आज देश में 338 यूनिवर्सिटी हैं- केंद्रीय मंत्री प्रधान ने कहा कि देश में 2014 में 723 विश्वविद्यालय, 36634 कॉलेज होते थे। आज 1338 यूनिवर्सिटी और 52081 कालेज हैं। तब देश में 350 स्टार्टअप था आज ढाई लाख स्टार्टअप है। आज बेरोजगारी दर 3.1 प्रतिशत है जो 2014 में 6 प्रतिशत से अधिक थी। 58 करोड़ लोगों का जनधन का खाता है। राजीव गांधी ने कहा था कि एक रुपए दिल्ली से आता था जो गांव में जाते जाते 15 पैसे तक हो जाता था। 51 लाख करोड़ रुपए नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में लोगों के खाते में पहुंचे हैं।

सीएम बोले-

मनमोहन सिंह के कार्यकाल जैसी लाचारगी नहीं चलेगी- कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने पाकिस्तान को बता दिया है कि एक को हाथ लगाया तो एक हजार को मार गिराएंगे। पीएम मोदी ने बताया है कि देश के अंदर मनमोहन सिंह के कार्यकाल जैसी लाचारगी नहीं चलेगी। प्रधानमंत्री मोदी ने हर मोर्चे पर अपने सख्त फैसले की छाप छोड़ी है।उन्होंने कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन मौन रहते थे, उनके दौर में सैनिकों के सर काटकर ले जाते थे।

लाड़ली बहनों के खाते में आज राशि ट्रांसफर करेंगे सीएम यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 14 जून को सागर जिले के केसली में आयोजित कार्यक्रम के दौरान लाड़ली बहना योजना की राशि महिलाओं के

बैंक खातों में ट्रांसफर करेंगे। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री हितग्राहियों से संवाद भी कर सकते हैं और सरकार की महिला कल्याण योजनाओं से जुड़ी जानकारी साझा करेंगे। लाड़ली बहना योजना राज्य सरकार की प्रमुख योजनाओं में शामिल है, जिसके तहत पात्र महिलाओं को हर माह 1500 रुपए की आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है।

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

ग़ज़ब का फ़लसफ़ा है, अजब-सी बयानी है,
हरेक का अपना फ़साना है, अपनी कहानी है।

हर कोई भीतर से ज्वालामुखी-सा उबल रहा,
दिल में उठा तूफ़ाँ है, आँखों से टपके पानी है।

लोग परिंदों की तरह आसमां में उड़े जा रहे हैं,
होश खोकर पागलपन में अँधी हुई जवानी है।

माथा बुलंदियों को छू रहा, पैर ज़मीं में धँसे हैं,
बर्बरों ने जन्नत को दोज़ख़ बनाने की ठानी है।

आज़ाद होकर भी दासता का जीवन जी रहे हैं,
लगता गाँधी, सुभाष की व्यर्थ गई कुरबानी है।

ज़िंदगी में उसूल फ़िज़ूल हुए, शूल-से चुभते हैं,
भोग- विलास को हुई जाती दुनिया दीवानी है।

- रामेश्वरम तिवारी

नागरिकों की सुरक्षा और कानून व्यवस्था के प्रति विश्वास बनाए रखना पुलिस का पहला कर्तव्य : सीएम

मध्यप्रदेश पुलिस ने ढाई साल के कार्यकाल में हासिल कीं कई ऐतिहासिक उपलब्धियां

नक्सलवाद को जड़ से खत्म कर सुशासन की मिसाल पेश करने वाला मध्यप्रदेश बना पहला राज्य

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि नागरिकों की सुरक्षा और कानून व्यवस्था के प्रति विश्वास बनाए रखना पुलिस का पहला कर्तव्य है। पीड़ित व्यक्तियों के साथ विनम्र व्यवहार और उनके हितों की सुरक्षा के लिए त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित करने को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए।

सिंहस्थ-2028, करोड़ों श्रद्धालुओं का आस्था पर्व है। इस आयोजन में संवेदनशीलता, सक्रियता, सतर्कता और सेवा भाव से मध्यप्रदेश पुलिस, आदर्श व्यवस्था का उदाहरण देश-दुनिया में प्रस्तुत कर सकेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शनिवार को पुलिस मुख्यालय में आयोजित आईजी कांफ्रेंस के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए यह विचार व्यक्त किए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के पुलिस मुख्यालय पहुंचने पर गार्ड ऑफ ऑनर देकर उनका अभिवादन किया गया। कॉन्फ्रेंस में पुलिस महानिदेशक श्री कैलाश मकवाणा, अपर मुख्य सचिव श्री संजय शुक्ला सहित वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आईजी स्तर के बाद संभाग स्तर पर भी समीक्षा बैठकें आयोजित की जाएंगी और वे स्वयं इन बैठकों में शामिल होंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि हमारी पुलिस ने ऐसे नेटवर्क को खत्म करने का काम किया है, जो बड़ा आतंकवादी बनकर पाकिस्तान के इशारे पर भारत के लिए संकट खड़ा कर सकता था। भविष्य में भी हमारी पुलिस बिलों में घुसे ऐसे संपोलों को ढूंढ़ निकालने का काम करेगी। इस नेटवर्क के खात्मे के दौरान पुलिस को कुछ जिहादी साहित्य भी मिला है, जिसके आधार पर आगे की जांच की जा रही है। सीएम यादव ने ये बातें पुलिस मुख्यालय में आईजी कॉन्फ्रेंस के उद्घाटन सत्र के बाद मीडिया से चर्चा में कहीं। उन्होंने भोपाल में पाकिस्तानी हैंडलर्स के इशारे पर काम करने वाले युवक फराज की गिरफ्तारी पर कहा कि और भी जो लोग ऐसी मानसिकता वाले होंगे, उन्हें भी हमारी पुलिस तलाश लेगी। मुख्यमंत्री ने पुलिस मुख्यालय में राज्य स्तरीय आईजी कॉन्फ्रेंस को संबोधित किया।मुख्यमंत्री को पुलिस मुख्यालय में गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया।

उन्होंने कहा कि ढाई साल के कार्यकाल में हमारी पुलिस ने कई ऐतिहासिक काम किए हैं। इसमें नक्सलवाद से मध्य प्रदेश को मुक्त करने का काम सबसे प्रमुख है। पुलिस ने साइबर चुनौतियों से निपटने में भी बड़ा रोल प्ले किया है।सीएम ने कहा कि मध्य प्रदेश में 8 साल बाद सब-इंस्पेक्टरों की भर्ती की गई है और अगले तीन वर्षों में 22 हजार पद भरे जाएंगे। इसके लिए हर साल भर्ती प्रक्रिया चलाई जाएगी। उन्होंने कहा कि धार में भोजशाला पर कोर्ट के फैसले के बाद पुलिस ने बड़ी ही समझदारी से पूरे मामले को हैंडल करने का काम किया है।

एयरफोर्स का विमान क्रैश

5 जवानों की मौत

- लैंडिंग के दौरान आग लगी, दो हिस्सों में टूटा

असम के जोरहाट शहर में एयरबेस पर हादसा

जोरहाट (एजेंसी)। असम में जोरहाट के रौरिया इंडियन एयरबेस पर शनिवार सुबह 10 बजे लैंडिंग के दौरान वायुसेना का विमान क्रैश हो गया। इस हादसे में पायलट समेत 5 जवानों की मौत हो गई। इनमें स्क्वाड्रन लीडर प्रशांत सिंह, फ्लाइट लेफ्टिनेंट शुभम कुमार, सार्जेंट जितेंद्र शर्मा, अग्निवीर वायु खेमाराम कुमावत और अग्निवीरवायु दानिश आलम शामिल हैं। एक को-पायलट घायल हो गया है। हादसा उस समय हुआ, जब विमान एयरबेस पर उतरने की कोशिश कर रहा था। हादसे के बाद उसमें आग लग गई और दो हिस्से में टूट गया। यह एएन-32 माल वाहक विमान था, जिसका इस्तेमाल सैनिकों और सामान की ढुलाई के लिए किया जाता है।

हादसे की वजह अब तक सामने नहीं आई

हादसे की वजह सामने नहीं आई है। इंडियन एयरफोर्स ने बताया कि विमान रुटीन उड़ान पर था। साथ ही अपील कि शुरुआती नतीजे आने तक कोई अंदाजा न लगाएं।

कोर्ट ऑफ इंक्वायरी के आदेश दे दिए हैं। सेना अधिकारी ने बताया कि असम के जोरहाट एयर बेस पर एएन-32 ट्रांसपोर्ट एयरक्राफ्ट के क्रैश होने से भारतीय वायु सेना के पांच जवान बलिदान हो गए हैं। इस हादसे में को-पायलट को बचा लिया गया है जिसका इलाज चल रहा है। फिलहाल विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने के कारणों का पता नहीं चल पाया है। इस हादसे में किसी के हताहत होने या घायल होने के संबंध में भी अभी तक कोई आधिकारिक या स्पष्ट जानकारी सामने नहीं आई है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 20 °c
न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 14 जून 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

फ्रांस-स्लोवाकिया की यात्रा पर रवाना हुए मोदी

● जी-7 समिट में शामिल होगे भारतीय प्रधानमंत्री

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीएम मोदी 13 से 18 जून तक 6 दिन की फ्रांस और स्लोवाकिया यात्रा पर शनिवार सुबह रवाना हो गए हैं। पीएम बनने के बाद मोदी की यह 7वीं फ्रांस यात्रा है। सबसे 13-14 जून को नीस शहर में राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के साथ द्विपक्षीय वार्ता करेंगे। साथ ही 'इंडिया

इनोवेट्स' कार्यक्रम का उद्घाटन करेंगे। इसके बाद स्लोवाकिया रवाना हो जाएंगे। यहां वे 15 जून तक रहेंगे। यहां प्रधानमंत्री रोबर्ट फिको और राष्ट्रपति पीटर पेलेग्रीनी से मुलाकात करेंगे। 1993 में स्लोवाकिया के आजाद देश बनने के बाद किसी भारतीय पीएम का यहां का पहला दौरा है। मोदी 16 जून को पेरिस लौट आएंगे। यहां एवियन शहर में होने वाले 17 जून को जी7 समिट में हिस्सा लेंगे।

ईरान के यूरेनियम भंडार पर हमला मतलब मौत

● आईआरजीसी ने साइटों पर बिछाया बारूदी सुरंगों का जाल

तेहरान (एजेंसी)। ईरान अपने संवर्धित यूरेनियम को किसी हमले के खिलाफ पहले के मुकाबले ज्यादा सुरक्षित कर दिया है। ईरान यह तय कर रहा है कि यूरेनियम को अमेरिकी फोर्स हमला करते हुए कब्जे में लेना चाहें तो यह उनके लिए तकरीबन

नामुमिकन मिशन साबित हो। ईरानी यूरेनियम भंडार को सील करते हुए इन तक जाने वाले रास्तों पर विस्फोटक माइन्स (बूबी ट्रैप) लगा रहे हैं। ऐसे में अमेरिकी यूरेनियम तक जाने की कोशिश करेंगे तो यह उनके लिए यह बड़े नुकसान का सबब बनेगा।

30 करोड़ वोटर कार्ड से हटेंगे धुंधले फोटो

● अब मकान नंबर की जगह '00' नहीं लिखा जाएगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। निर्वाचन आयोग घर-घर जाकर वोटरों की पहचान करने के अंतिम दौर में पहुंच रहा है। अब बचे हुए 39 करोड़ 73 लाख वोटर्स के दरवाजे पर दस्तक देने की तैयारी है। इस

बीच एक अखबार ने पड़ताल की कि स्पेशल इंटेंसिव रिविजन के बाद मतदाता फोटो पहचान कार्ड यानी एपिक में क्या बड़े बदलाव आए हैं। एसआईआर के बाद अब तक तैयार 59 करोड़ मतदाताओं के फोटो न सिर्फ हाल ही के हैं बल्कि रंगीन भी हैं। चुनाव आयोग के 9 लाख 20 हजार से ज्यादा बीएलओ ने पहचान पत्र के साथ जोड़ा है।

अब रिटायर्ड जज निपटाएंगे दो महिला अफसरों का विवाद

● सुप्रीम कोर्ट भी हैरान, कहा-आपसी विवाद में कर रहीं कैरियर बर्बाद ● आईएएस रोहिणी और आईपीएस रूपा में सुलह कराने की दी जिम्मेदारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने रिटायर्ड जज जस्टिस कुरियन जोसेफ से आग्रह किया है कि वे आईएएस अफसर रोहिणी सिंदुरी और आईपीएस रूपा मुदगिल के बीच चल रहे लंबे कानूनी विवाद में बीच-बचाव करें और इसका कोई स्थायी समाधान निकालें।

जस्टिस जोसेफ के सामने ये दोनों महिला अधिकारी जुलाई में पेश होंगी। आईएएस रोहिणी सिंदुरी और आईपीएस रूपा मुदगिल दोनों ही कर्नाटक कैडर की ऑल इंडिया

सर्विसेज की अधिकारी हैं और पिछले तीन वर्षों से एक-दूसरे के खिलाफ मानहानि का मुकदमा लड़ रही हैं। दोनों के बीच इस झगड़े की शुरुआत 2023 में एक सार्वजनिक बहस से शुरू हुई थी।

अपना ही कैरियर बर्बाद कर रही हैं- शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट के रिटायर्ड जज जोसेफ कुरियन से मध्यस्थता का आग्रह जस्टिस सतीश चंद्र शर्मा और जस्टिस संजीव सचदेवा की बेंच ने की है। सुप्रीम कोर्ट की बेंच ने दोनों वरिष्ठ महिला अधिकारियों के बीच चल रही कानूनी लड़ाई को लेकर कहा कि ये अपना ही कैरियर बर्बाद कर रही हैं। बेंच ने दोनों अफसरों के वकीलों से कहा कि इनके बीच झगड़े का समाधान मध्यस्थता के माध्यम से निकालने की संभावना तलाशें।

● **जुलाई में जस्टिस कुरियन जोसेफ करेंगे सुनवाई-** सुप्रीम कोर्ट ने दोनों अफसरों से जुलाई में जस्टिस (रिटायर्ड) जोसेफ के सामने पेश होने का निर्देश दिया है। सुप्रीम कोर्ट ने ट्रायल कोर्ट में दोनों की ओर से एक-दूसरे के खिलाफ चल रहे मानहानि के मुकदमों की कार्यवाही पर भी रोक लगा दी है। बात 2023 के फरवरी की है। आईपीएस रूपा मुदगिल ने सोशल मीडिया पर आईएएस रोहिणी सिंदुरी के खिलाफ कई सारे पोस्ट डाले थे। इसमें उनके खिलाफ आय से अधिक संपत्ति जैसे आरोप भी लगाए गए थे। रोहिणी ऐसी टिप्पणियां करने को लेकर उनके खिलाफ कोर्ट पहुंच गईं और उन्हें इसमें सफलता भी मिली और उन्हें इस तरह के पोस्ट करने से रोक दिया गया। आईपीएस रूपा इसे चुनौती देते हुए कर्नाटक हाई कोर्ट पहुंचीं, लेकिन उनकी याचिका खारिज कर दी गई। फिर सुप्रीम कोर्ट में अपील किया गया और सर्वोच्च अदालत ने दोनों अफसरों को आपसी मतभेद सुलझाने को कहा।

यूपी में अब कोई भी बच्चा पढ़ाई में नहीं छूटेगा पीछे

● जुलाई से 'कैच-अप शिक्षण' अभियान शुरू करेगी योगी सरकार

● **किसी बच्चे को नहीं कहा जाएगा कमजोर-** कैच-अप शिक्षण में पहले शिक्षक उदाहरण देंगे, फिर विद्यार्थियों के साथ अभ्यास करेंगे और अंत में बच्चे स्वयं कार्य करेंगे। पीयर लर्निंग, पेयर लर्निंग और कोआपरेटिव लर्निंग जैसी विधियों का भी प्रयोग होगा। भाषा खेल, कहानी, चित्र आधारित गतिविधियां, रोल प्ले, स्किट और प्रतियोगिताओं के माध्यम से पढ़ाई को रोचक बनाया जाएगा। किसी भी विद्यार्थी को कमजोर या पीछे होने का एहसास नहीं कराया जाएगा।

लखनऊ (एजेंसी)। अब परिषदीय और कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों में कोई भी बच्चा पढ़ाई में पीछे नहीं छूटेगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) और नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन (एनसीएफएसई) के अनुरूप प्रदेश सरकार जुलाई से विशेष 'कैच-अप शिक्षण' अभियान शुरू करने जा रही है। इससे विद्यार्थियों के सीखने के अंतर (लर्निंग गैप) को भरना है जो नियमित कक्षाओं के बावजूद अपेक्षित अधिगम स्तर तक नहीं पहुंच पा रहे हैं। सभी डायट प्राचार्यों और जिला बेसिक शिक्षा अधिकारियों को अपर मुख्य सचिव बेसिक और माध्यमिक शिक्षा पार्थ सारथी सेन शर्मा ने विस्तृत दिशा-निर्देश जारी किए हैं। इसके तहत जुलाई में सभी विद्यालयों में 15 दिवसीय पुनरावृत्ति शिक्षण अभियान चलाया जाएगा।

ऑब्जर्व कर रहा हूं..कौन बोलते हैं, कौन-कौन चुप रहते हैं

कलेक्टर-एसपी कॉन्फ्रेंस होगी जुलाई में

कहा- अधिकारियों के कामकाज की समीक्षा करूंगा

भोपाल (नप्र)। मैं ऑब्जर्व कर रहा हूं कि वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में होने वाली बैठकों में कौन-कौन से कलेक्टर बोलते हैं और कौन शांत रहते हैं। मैंने देखा है कि अधिकांश कलेक्टर शांत ही रहते हैं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने ये बातें शनिवार को समान नागरिक संहिता (यूसीसी) को लेकर बुलाई गई वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग (वीसी) बैठक में कहीं। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि जुलाई में कलेक्टर-एसपी कॉन्फ्रेंस होगी, जिसकी तारीख जल्द घोषित की जाएगी। इस फिजिकल कॉन्फ्रेंस में जिलों की रैंकिंग और अधिकारियों के कामकाज की समीक्षा की जाएगी। दरअसल, सीएम हाउस से वीसी के माध्यम से समान नागरिक संहिता लागू करने की तैयारियों पर अधिकारियों से चर्चा की गई है। इस दौरान मुख्यमंत्री स्वयं महत्वपूर्ण जानकारियां नोट करते रहे और विभिन्न विषयों पर अधिकारियों को आवश्यक निर्देश देते रहे।

55 में से 36 जिलों में हो चुकी बैठकें

बैठक में बताया गया कि 55 में से 36 जिलों में समान नागरिक संहिता (यूसीसी) को लेकर बैठकें हो चुकी हैं और शेष जिलों में भी इन्हें जल्द पूरा कर लिया जाएगा।मुख्य सचिव अनुराग जैन और मुख्यमंत्री सचिवालय के अधिकारियों की मौजूदगी में मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि इसके लिए एक लिंक जारी की गई है।

सीएम बोले- कलेक्टरों को ऑब्जर्व कर रहा हूं- बैठक के दौरान मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वे कलेक्टरों को ऑब्जर्व कर रहे हैं कि कौन से कलेक्टर जवाब देने में सक्रिय रहते हैं और कौन चुप रहते हैं। दरअसल, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के दौरान इंदौर, जबलपुर, सीधी, गुना, डिंडोरी और खंडवा के कलेक्टर आमतौर पर चर्चा और सवाल-जवाब में भाग लेते हैं, जबकि अधिकांश कलेक्टर चुप्पी साधे रहते हैं। इसलिए मुख्यमंत्री ने कलेक्टरों को आवश्यक मुद्दों पर अपनी बात रखने के लिए प्रेरित किया। मानसून की तैयारी और नीट परीक्षा पर भी चर्चा बैठक में मानसून की तैयारियों को लेकर कलेक्टरों को निर्देश दिए गए कि नगरीय निकाय क्षेत्रों में नालों की सफाई और बारिश के पानी की निकासी की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करें, ताकि जलभराव की स्थिति में लोगों को परेशानी न हो। साथ ही 21 जून को होने वाली नीट परीक्षा की तैयारियों को लेकर भी सतर्कता बरतने के निर्देश दिए गए। मुख्यमंत्री ने कहा कि नीट परीक्षा की व्यवस्थाएं यूपीएससी परीक्षा से भी अधिक सतर्कता के साथ की जाती हैं।

लेफ्टिनेंट जनरल धीरज सेठ होंगे अगले आर्मी चीफ

● जनरल उपेंद्र द्विवेदी की जगह लेंगे, दो महीने पहले उप सेना प्रमुख बने थे

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने लेफ्टिनेंट जनरल धीरज सेठ को भारतीय सेना का अगला प्रमुख (चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ) नियुक्त किया है। सेठ अभी उप सेना प्रमुख (वाइस चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ) के पद पर कार्यरत हैं। वे मौजूदा आर्मी चीफ जनरल उपेंद्र द्विवेदी की जगह लेंगे। जनरल उपेंद्र द्विवेदी का कार्यकाल जून 2026 तक है। उन्होंने 30 जून 2024 को आर्मी चीफ का पद संभाला था। आर्मी चीफ का कार्यकाल 3 साल या 62 साल की उम्र (दोनों में जो भी पहले पूरा हो) तक होता है।

40 साल का सैन्य अनुभव, कई अहम कमानों का नेतृत्व किया- दिसंबर 1986 में आर्मर्ड कोर में कमीशन हासिल करने वाले धीरज सेठ को करीब 40 साल का सैन्य अनुभव है।

जूनियर कमांड कोर्स में टॉपर कई सम्मान हासिल किए

वे नेशनल डिफेंस एकेडमी खड़कवासला, इंडियन मिलिट्री एकेडमी, वेलिंगटन और नेशनल डिफेंस कॉलेज के पूर्व छात्र हैं। वे जूनियर कमांड कोर्स में फर्स्ट रैंक और सेना में बेस्ट ऑल राउंड स्टूडेंट ऑफीसर मेडल हासिल कर चुके हैं। उन्हें उनकी विशिष्ट सेवाओं के लिए परम विशिष्ट सेवा मेडल, उत्तम युद्ध सेवा मेडल और अति विशिष्ट सेवा मेडल से सम्मानित किया जा चुका है।

अभिषेक बनर्जी के घर रात 3 बजे पुलिस की रेड

● चार घंटे तक तलाशी, बाहर सेंट्रल फोर्स के जवान खड़े रहे, आरोप-ताला तोड़कर घुसे

कोलकाता (एजेंसी)। ममता बनर्जी के भतीजे अभिषेक बनर्जी के कालीघाट स्थित घर पर कोलकाता पुलिस ने शुक्रवार देर रात 3 बजे छापा मारा। पुलिस टीम सेंट्रल फोर्स के जवानों के साथ पहुंची। पुलिस अधिकारी अंदर गए, जवान गेट के बाहर पहरा देते रहे। तलाशी अभियान करीब 4 घंटे तक चला। छापे की सूचना मिलते ही ममता बनर्जी तुरंत अभिषेक के घर आईं, थोड़ी देर रुकीं फिर वापस चली गईं। पुलिस सूत्रों के मुताबिक यह छापेमारी अभिषेक के पीए सुमित रॉय का पता लगाने के लिए की गई थी। सुमित के खिलाफ सालबोनी पुलिस स्टेशन में वित्तीय धोखाधड़ी को लेकर केस दर्ज है। तब से पुलिस सुमित की तलाश में है।

मानसून से पहले प्री मानसून ने ढाया 'कहर'

● राजस्थान में रेलवे स्टेशन का शेड उखड़कर ट्रैक पर गिरा ● दिल्ली में बारिश के चलते फ्लाइट्स लेट, एमपी में तूफान ● यूपी के वाराणसी में आंधी का कहर, हाथरस में सड़कें डूबीं

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी में प्री-मानसून एक्टिव हो गया है। शनिवार सुबह कानपुर-अयोध्या, उन्नाव समेत 25 शहरों में बारिश हुई। वाराणसी में दोपहर में तूफान आया। इससे होर्डिंग उड़ गई। लखनऊ में तेज आंधी आई, दिन में अंधेरा छा गया। हाथरस में बारिश के चलते कोतवाली सदर में पानी भर गया। सड़कें डूब गईं। राजस्थान में शुक्रवार को बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सीकर और चूरू के कई इलाकों में हवा के साथ बारिश हुई। चूरू के श्रीमकड़ीनाथ रेलवे स्टेशन पर लगा टिनशेड अंधड़ से रेलवे ट्रैक

पर गिर गया। इससे ट्रेनें लेट हो गईं। दिल्ली में शनिवार सुबह बारिश के चलते कई फ्लाइट्स लेट हुईं। इंडिगो एयरलाइंस ने एक्स पर पोस्ट करके कहा- खराब मौसम की वजह से उड़ानों के समय पर असर पड़ा है। मानसून की झारखंड और ओडिशा के कुछ हिस्सों में एंट्री हो गई। अगले 3 दिन में मानसून के छत्तीसगढ़ और उत्तर प्रदेश पहुंचने की संभावना है। 4 जून को केरलम में दस्तक देने के बाद मानसून 9 दिन में 19 राज्यों तक पहुंच चुका है। राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, तेलंगाना और मध्य प्रदेश के कई शहरों में शुक्रवार को पारा 40 डिग्री से ज्यादा रहा। राजस्थान के श्रीगंगानगर में सबसे ज्यादा 44.2 डिग्री तापमान रहा।

मल्टी लेयर्ड बैलिस्टिक डिफेंस सिस्टम का टेस्ट कामयाब

● 5000 किमी दूर से आ रही मिसाइल को भी मार गिराएगा ● दुनिया में यह तकनीक हासिल करने वाला भारत 5वां देश

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत अब लंबी दूरी की बैलिस्टिक मिसाइलों, यहां तक कि इंटरकॉन्टिनेंटल बैलिस्टिक मिसाइल के खतरों का भी मुकाबला कर सकता है। डीआरडीओ ने 10 और 11 जून को लगातार 3 फ्लाइट टेस्ट किए गए, जिनमें मल्टी-लेयर्ड बैलिस्टिक मिसाइल डिफेंस सिस्टम का प्रदर्शन किया गया। इसमें इंटरकॉन्टिनेंटल बैलिस्टिक मिसाइल क्लास तक के खतरों समेत बैलिस्टिक मिसाइलों को रोकने और बेअसर करने की क्षमता भी शामिल है। यह स्वदेशी तकनीक दुश्मन की मिसाइलों को लक्ष्य तक पहुंचने से पहले हवा में ही नष्ट कर देती है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने 13 जून को टेस्टिंग की तस्वीरें एक्स अकाउंट पर शेयर की हैं। इसके साथ-साथ नेवल एंटी शिप का टेस्ट किया।

लंबी दूरी तक मार करने वाली मिसाइल- आसान भाषा में इंटरकॉन्टिनेंटल बैलिस्टिक मिसाइल को बहुत लंबी दूरी तक मार करने वाली मिसाइल कहा जा सकता है। यह ऐसी मिसाइल होती है जो एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप तक पहुंच सकती है। आमतौर पर 5,500 किलोमीटर से ज्यादा दूरी तक मार कर सकती है। इसके अलावा यह परमाणु हथियार ले जाने में भी सक्षम होती है। यह मिसाइल रॉकेट की तरह ऊपर अंतरिक्ष की ओर जाती है, फिर बहुत ऊंचाई से पृथ्वी की ओर लौटती है और बहुत तेज स्पीड से टारगेट पर हमला करती है। इसी वजह से इसे दुनिया के सबसे शक्तिशाली रणनीतिक हथियारों में गिना जाता है। मल्टी लेयर्ड का काम दुश्मन की बैलिस्टिक मिसाइल को उसके टारगेट तक पहुंचने से पहले ही मार गिराना है।

टेस्टिंग से पहले 11 गांव खाली कराए गए थे

ओडिशा के बालासोर जिले में डीआरडीओ के तय मिसाइल टेस्ट से पहले दोनों दिन 11 गांव खाली कराए थे। चांदीपुर स्थित इंटीग्रेटेड टेस्ट रेंज के लॉन्च पैड-3 के 3.5 किमी के दायरे से 11,442 लोगों को अस्थायी तौर पर सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया था। हालांकि टेस्टिंग के बाद शाम को उन्हें घर लौटने की अनुमति दे दी गई थी। चांदीपुर इंटीग्रेटेड टेस्ट रेंज से जब भी लंबी दूरी और रणनीतिक महत्व की मिसाइलों का टेस्ट होता है, तब-तब लॉन्च पैड के आस-पास के गांवों को ऐहतियातन खाली करा लिया जाता है।

राहुल राजस्थान से करेंगे पेपरलीक के खिलाफ आंदोलन की शुरआत

● 17 जून को कोटा में होगा स्टूडेंट सम्मेलन

जयपुर (एजेंसी)। नीट पेपरलीक मामले के बाद अब कांग्रेस ने इसके खिलाफ देशव्यापी आंदोलन शुरू करने की घोषणा की है।

इसकी शुरुआत 17 जून से कोटा से की जाएगी। राहुल गांधी 17 जून को कोटा में स्टूडेंट सम्मेलन करेंगे। इस सम्मेलन में पेपरलीक और युवाओं से जुड़े मुद्दों पर राहुल गांधी स्टूडेंट्स से बात करेंगे। कांग्रेस के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल ने देशव्यापी आंदोलन की घोषणा की है।

वेणुगोपाल ने कहा- राहुल गांधी देश के छात्रों और युवाओं के लिए लगातार आवाज उठाने में एक विश्वसनीय आवाज बनकर उभरे हैं। कोटा के बाद 10 जुलाई को प्रयागराज, 11 जुलाई को पटना और 14 जुलाई को दिल्ली में स्टूडेंट सम्मेलन होंगे।

खजराना गणेश मंदिर में बदलाव, गर्भगृह का प्रवेश द्वार चौड़ा, सभा मंडप नीचे होगा

शुरू होंगे विकास कार्य, पहले चरण पर 8-10 करोड़ खर्च होने का अनुमान

इंदौर। प्रसिद्ध खजराना गणेश मंदिर में श्रद्धालुओं की बढ़ती संख्या और दर्शन व्यवस्था को अधिक सुगम बनाने के उद्देश्य से व्यापक विकास कार्य शुरू किए जा रहे हैं। मंदिर प्रबंधन द्वारा तैयार किए गए मास्टर प्लान के तहत पहले चरण में गर्भगृह के प्रवेश द्वार को चौड़ा किया जाएगा, जबकि गर्भगृह के सामने स्थित सभा मंडप को भी नीचे किया जाएगा ताकि कतार में पीछे खड़े श्रद्धालुओं को भगवान गणेश के दर्शन सहजता से हो सकें। देशभर से आने वाले लाखों श्रद्धालुओं की आस्था के केंद्र इस मंदिर में प्रतिदिन बड़ी संख्या में भक्त दर्शन के लिए पहुंचते हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए मंदिर परिसर के विकास और सुविधाओं के विस्तार की योजना तैयार की गई है। पहले चरण के कार्यों पर लगभग 8 से 10 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे, जबकि पूरे मास्टर प्लान की अनुमानित लागत 25 से 30 करोड़ रुपए बताई गई है।

डेढ़ क्विंटल चांदी हटाई गई

गर्भगृह के प्रवेश द्वार को चौड़ा करने की प्रक्रिया के तहत द्वार पर लगी लगभग 150 किलो चांदी पहले ही हटाई जा चुकी है। इस चांदी को सुरक्षित रूप से ट्रेजरी में जमा कराया गया है। इसके बाद संरचना की मजबूती और निर्माण संबंधी पहलुओं का परीक्षण एसजीएसआईटीएस कॉलेज द्वारा किया गया। तकनीकी जांच रिपोर्ट मंदिर प्रबंधन को मिल चुकी है, जिसमें निर्माण प्रक्रिया, संरचनात्मक सुरक्षा और कार्यों के क्रम को लेकर आवश्यक सुझाव दिए गए हैं। मंदिर के पुजारी पंडित अशोक भट्ट ने बताया कि मंदिर प्रबंधन समिति का मास्टर प्लान समिति के अध्यक्ष एवं कलेक्टर शिवम वर्मा तथा निगम आयुक्त क्षितिज सिंघल के मार्गदर्शन में तैयार किया गया है। उन्होंने बताया कि रिपोर्ट के अनुसार निर्माण शुरू करने से पहले संरचना को सुरक्षित रखने के लिए सपोर्ट लगाए जाएंगे। इसके बाद जैकेटिंग की प्रक्रिया अपनाते हुए प्रवेश द्वार को चौड़ा किया जाएगा।

श्रद्धालुओं को सुविधा होगी

पंडित अशोक भट्ट के अनुसार इस परिवर्तन का लाभ केवल सामान्य श्रद्धालुओं को ही नहीं मिलेगा, बल्कि वीआईपी दर्शन के लिए आने वाले भक्तों, नवविवाहित दूल्हा-दुल्हन और अन्य विशेष अतिथियों को भी अधिक सुविधाजनक व्यवस्था उपलब्ध होगी। इससे दर्शन के दौरान भीड़ प्रबंधन बेहतर होगा और किसी भी श्रद्धालु के दर्शन में बाधा नहीं आएगी। मंदिर प्रबंधन का मानना है कि मास्टर प्लान के तहत होने वाले ये कार्य खजराना गणेश मंदिर की व्यवस्था को अधिक व्यवस्थित और श्रद्धालु-अनुकूल बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित होंगे।

पारदर्शी प्लास्टिक शीट लगाई

उन्होंने बताया कि आगामी एक-दो दिनों में निर्माण कार्य शुरू होने की संभावना है। वर्तमान में गर्भगृह के आसपास पारदर्शी प्लास्टिक शीट लगाई गई है ताकि निर्माण के दौरान धूल या अन्य कण अंदर न पहुंच सकें। दर्शन व्यवस्था प्रभावित न हो, इसके लिए सभी निर्माण कार्य रात के समय किए जाएंगे, जब मंदिर में श्रद्धालुओं का प्रवेश बंद रहता है। मास्टर प्लान के तहत सभा मंडप में भी महत्वपूर्ण बदलाव किया जाएगा। गर्भगृह के सामने स्थित इस मंडप को लगभग 2 से 2.5 फीट नीचे किया जाएगा। वर्तमान में आगे खड़े श्रद्धालुओं के कारण पीछे खड़े लोगों को भगवान के दर्शन करने में कठिनाई होती है। मंडप का स्तर कम होने से पीछे की कतारों में खड़े भक्त भी स्पष्ट रूप से दर्शन कर सकेंगे।

शादी के 4 माह बाद युवक ने फांसी लगाई

इंदौर। शादी के मात्र चार माह बाद ही युवक इतना परेशान हो गया कि उसने तंग आकर फांसी लगा ली। मरने से पहले उसने पत्नी और साली पर प्रताड़ना के आरोप लगाए थे। उसकी शादी के दिन ही पत्नी के मायके वालों ने साढ़े आठ लाख रुपए के गहने मांग लिए थे। कनाड़िया पुलिस के अनसुार, घटना के बाद पुलिस ने जांच की। पुलिस के अनुसार, शादी के चार माह बाद आत्महत्या करना कई आशंकाओं को जन्म दे रहा था। इसके चलते पूरे मामले की विस्तार से जांच की गई। मृतक के परिजनों के अलग-अलग बयान दर्ज किए गए। ससुराल पक्ष के लोगों से भी पुलिस ने बात की थी। मृतक की बहन आरती ने बताया कि शादी वाले दिन ही वधु पक्ष ने आठ लाख रुपए की ज्वेलरी अपने पास रखवा ली थी। विकास की पत्नी पूजा हर तीसरे दिन अपने सुखलिया में रहने वाली बड़ी बहन के घर चली जाती थी। परेशान होकर जब विकास उसे फोन लगाता तो वह उसका कॉल तक रिसीव नहीं करती थी। विकास के परिजनों ने यह भी आरोप लगाया कि पूजा, उसकी बड़ी बहन सरस्वती सहित ससुराल के अन्य लोग आए दिन विकास को छोटी-छोटी बातों पर प्रताड़ित करते थे। विकास ने पूजा को समझाने और घर बसाने का प्रयास किया। तंग आकर उसने फांसी लगा ली।

रंजिश में युवक के अपहरण की कोशिश

इंदौर। पुलिस की नाकामी के चलते बदमाश दिनदहाड़े गंभीर वारदातों को अंजाम देने लगे हैं। ऐसा ही एक मामला राजेन्द्र नगर थाना क्षेत्र में देखा गया। यहां केशरबाग रोड पर तीन बदमाशों ने युवक से मारपीट की, इसके बाद उसका अपहरण करना चाहा। शिकायत के आधार पर पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। फरियादी रोहित शर्मा (28) निवासी सदर बाजार मेन रोड ने बताया कि 11 जून को दोपहर 2 बजे वह केशरबाग सर्विस रोड स्थित टिंकुस कैफे के सामने से गुजर रहा था। इसी दौरान कपिल जायसवाल, उसका साथी अमन बैस और एक अन्य युवक वहां पहुंचे और उसे घेर लिया। शिकायत के अनुसार एक आरोपी बाइक पर सवार था, जिसने रोहित की बाइक के आगे अपना बाइक लगा दी। इसके बाद कपिल और अमन ने रंजिश को लेकर रोहित के साथ मारपीट की। पीड़ित का आरोप है कि आरोपी उसे जबरदस्ती कार में बैठाकर अपने साथ ले जाने की कोशिश भी कर रहे थे। इसी दौरान रोहित द्वारा शोर मचाने और मदद मांगने पर आसपास मौजूद लोग मौके पर पहुंच गए, जिसके बाद आरोपी वहां से भाग निकले। पुलिस ने घटना स्थल पर लगे सीसीटीवी फुटेज खंगालने शुरू कर दिए हैं, ताकि आरोपियों तक पहुंचा जा सके।

छेड़छाड़ से त्रस्त छात्रा ने फांसी लगाई

इंदौर। छेड़छाड़ से परेशान छात्रा ने अपने घर पर फांसी लगाकर जान दे दी। उसने एक माह पहले परदेशीपुरा थाने में आरोपी युवक की शिकायत की थी, लेकिन पुलिस ने कार्रवाई करने के बजाए उसे समझाइश देकर छोड़ दिया था। मृतका नाबालिग होकर कक्षा 12 वीं में पढ़ती है। परिजनों के अनुसार छात्रा ने थाने में लिखित शिकायत देकर युवक नमन पर पीछा करने और धमकाने के आरोप लगाए थे। शिकायत में यह भी कहा गया था कि युवक ने उसके जीजा को नुकसान पहुंचाने की धमकी दी थी। शुक्रवार सुबह छात्रा को उसके पिता ने कमरे में फंदे पर लटका देखा। उसे तुरंत अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने मौके का निरीक्षण किया है। कमरे से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है। घटना के बाद आक्रोशित परिजनों और कुलकर्णी भट्ठा क्षेत्र के लोगों ने आरोपी के खिलाफ कार्रवाई की मांग को लेकर छात्रा का शव सड़क पर रखकर चक्काजाम कर दिया। 15 मिनट तक रहवासी और मृतका का परिजन प्रदर्शन करते रहे। उनका आरोप है कि युवक की प्रताड़ना से परेशान होकर छात्रा ने यह कदम उठाया। पुलिस ने कार्रवाई का आश्वासन दिया, तब जाकर छात्रा का अंतिम संस्कार किया गया।

'मित्र सारथी' में बंटी अध्यक्ष, सोनू सचिव

इंदौर। मानव अधिकारों की रक्षा एवं गरीबों के अधिकारों की लड़ाई लड़ने संस्था मित्र सारथी का गठन किया गया। संस्था में बंटी भोरुडे को अध्यक्ष और सोनू काशिद को सचिव बनाया गया है। कार्यकारिणी में उपाध्यक्ष मनीष चौधरी, कोषाध्यक्ष धर्मेंद्र साहू, प्रचार मंत्री राहुल गाड़े, सहसचिव कपिल केशरी, कैलाश ठाकुर, संदीप जाधव, रोहित गाड़े, राहुल डोगरे, हितेश ठाकुर चुने गए। सभी को विधायक महेंद्र हार्डिया, पार्षद नंदकिशोर पहाड़िया, जीतू यादव ने बधाई दी।

अपराधियों का कंटेंट लाइक, 25 तलब

इंदौर। पुलिस लगातार सोशल मीडिया पर नजर रख रही है। सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक टिप्पणियां करने और अपराधियों का महिमामंडन करने वाले 25 हुड़दंगियों को सदर बाजार पुलिस ने तलब किया। इनमें 15 नाबालिग निकले। पुलिस ने उनके माता-पिता को थाने बुलवाया और काउंसलिंग कर सोशल मीडिया के सुरक्षित इस्तेमाल की समझाइश दी। साथ ही चेतावनी दी कि दोबारा ऐसी गतिविधि में पाए जाने पर सख्त कानूनी कार्रवाई की थी। वहीं, माहौल खराब करने की कोशिश करने वाले अन्य 10 बालिग आरोपियों के खिलाफ पुलिस ने सख्त रवैया अपनाया है। डिजिटल माध्यमों पर अशांति फैलाने और भड़काऊ कंटेंट को बढ़ावा देने के आरोप में इन सभी 10 बालिगों के विरुद्ध प्रतिबंधात्मक धाराओं में कार्रवाई की गई है।

तीन तस्करों से मादक पदार्थ जब्त

इंदौर। मादक पदार्थों की तस्करी रोकने पुलिस आपरेशन ईगल क्ला चला रही है। इसके अंतर्गत क्राइम ब्रांच, राजेन्द्र नगर और चंदन नगर पुलिस ने तस्करों से लाखों का मादक पदार्थ जब्त किया है। क्राइम ब्रांच की टीम ने लोखंडे पुल के पास से अभिषेक यादव निवासी यादवनंद नगर को पकड़ा। उसके पिट्ठू बैग में 2.125 ग्राम गांजा मिला। आरोपी दिहाड़ी मजदूरी करता है। चंदन नगर पुलिस ने ग्राम सिंहासा रोड आईटी पार्क के पास से शाहरूख उर्फ बुड्डन पिता इब्राहिम निवासी केशव नगर सिरपुर को 12.59 ग्राम ब्राउन शुगर के साथ पकड़ा। आरोपी रतलाम, मंदसौर, उज्जैन से मादक पदार्थ लाकर यहां टोकन बनाकर सप्लाय करता था। राजेन्द्र नगर पुलिस ने योगेश पिता देवराम माठे निवासी आनंद नगर से 1.641 ग्राम गांजा जब्त किया है। सभी आरोपियों पर एनडीपीएस की धाराओं में कार्रवाई की गई है।

युवक को डंडों से पीटा

इंदौर। स्कीम नंबर 140 में सार्वजनिक स्थान पर बैठने की बात को लेकर हुए विवाद में बदमाशों ने युवक पर बेल्ट और डंडों से जानलेवा हमला कर दिया। तिलक नगर पुलिस के अनुसार कैलाशपुरी अमन पिता शिव चौधरी ने बताया कि वह नगर निगम टंकी के पास लगी पब्लिक सीट पर बैठा था, तभी वहां सूरज नगर के रहने वाले बलराम राठौर, पिंटू चौहान और उनके अन्य साथी आ धमके। आरोपियों में से एक युवक अमन के ठीक सामने वाली सीट पर पैर फैलाकर बैठ गया। अमन ने जब उसे पैर हटाने को कहा तो आरोपी मारपीट पर उतारू हो गए।

सड़क हादसे में अधेड़ की मौत

इंदौर। अज्ञात वाहन की चपेट में आने से अधेड़ युवक की मौत हो गई। लसूड़िया पुलिस के अनुसार, स्कीम नंबर 140 स्थित आईडीए मल्टी के रहने वाले अशोक(55) पिता गणपत किसी काम से एसआर कंपाउंड गए थे। इसी दौरान कंपाउंड परिसर के समीप तेज रफ्तार वाहन ने उन्हें टक्कर मार दी। घायल अशोक को तुरंत नजदीकी अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने परीक्षण के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया।

29 लाख की लूट के बदमाशों को पकड़ने में पुलिस की 8 टीमें लगीं

व्यस्त मार्ग पर रैकी, फिर वारदात, कई संदिग्ध हिरासत में

इंदौर। स्क्रैप व्यापारी मुकेश अग्रवाल के साथ गुरुवार को 29 लाख रुपए लुटने वाले आरोपी अब तक पुलिस के हाथ नहीं लगे हैं। आरोपियों को पकड़ने 8 टीमें कई राज्यों, शहरों में रवाना की गई। व्यस्त मार्ग पर यह घटना रैकी के बाद की गई। इस मामले में पंढरीनाथ पुलिस ने कई संदिग्धों को हिरासत में लिया है। वहीं, घटना स्थल के आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज खंगाले हैं। फुटेज में केवल दो युवक ही वारदात करते दिख रहे हैं। जानकारी के मुताबिक, व्यापारी रात करीब 8.30 बजे बर्तन बाजार और मोहनपुरा क्षेत्र के व्यापारियों से नकदी एकत्रित कर वापस लौट रहे थे। इसी दौरान एक्टिवा सवार दो युवक उनके पास पहुंचे और अचानक उन्हें रोक लिया। इससे पहले कि वे कुछ समझ पाते, बदमाश लाखों रुपए से भरा बैग छीनकर भाग निकले।

फुटेज खंगाल रही पुलिस- मामले की गंभीरता को देखते हुए डीसीपी सुनील मेहता के निर्देश पर पुलिस ने आरोपियों की तलाश करने टीमें गठित कर दी है। टीम को घटनास्थल और आसपास के क्षेत्रों में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज में दोनों आरोपी वारदात करते नजर आए। फुटेज के आधार पर पुलिस आरोपियों की पहचान और मूवमेंट का पता लगाने का प्रयास कर रही है। शुरूआती जांच में यह मामला पूरी तरह सुनियोजित प्रतीत हो रहा है।

35 पुलिसकर्मी जुटे

घटना की गंभीरता को देखते हुए आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए तीन थाना क्षेत्रों की पुलिस को लगाया गया है। करीब 35 पुलिसकर्मी लगातार संभावित ठिकानों और भागने के रास्तों की जांच कर रहे हैं। पुलिस इस एंगल से भी जांच कर रही है कि व्यापारी की गतिविधियों और नकदी की जानकारी किसी परिचित व्यक्ति द्वारा बदमाशों तक पहुंचाई गई हो। इसी वजह से एजेंट के संपर्कों और परिचितों से भी पूछताछ की जा रही है। पुलिस अधिकारियों का दावा है कि तकनीकी साक्ष्यों और सीसीटीवी फुटेज के आधार पर आरोपियों को जल्द गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

व्यस्त मार्ग पर हादसा - व्यस्त मार्ग पर हुई इस घटना ने पुलिस की लापरवाही उजागर कर दी है। घटना के 24 घंटे बीतने के बाद भी आरोपियों की अब तक कोई जानकारी नहीं लगी है। सूत्रों की मानें तो घटना स्थल से कुछ दूर ही पुलिस जवान तैनात थे, लेकिन उन्हें वारदात की भनक तक नहीं लग पाई। सहायक पुलिस आयुक्त, पंढरीनाथ थाना विजय तिवारी का कहना है कि आरोपियों ने रैकी के बाद वारदात की है। प्रारंभिक रुप से दो की पहचान हुई है। 8 टीमें को रवाना किया गया है। लूट में व्यापारी का रिश्तेदार, मित्र भी शामिल होने की बात सामने आई है।

वायरल गर्ल मोनालिसा की याचिका पर हाई कोर्ट में सुनवाई टल गई

शादी को अवैध साबित करने की साजिश का आरोप लगाया

इंदौर। महाकुंभ के दौरान सोशल मीडिया पर चर्चित हुई युवती और उसके पति फरमान की ओर से दायर याचिका पर शुक्रवार को हाईकोर्ट में सुनवाई हुई। युवती ने आरोप लगाया है कि उसके पिता ने दस्तावेजों में कथित हेरफेर कर उसकी वैध शादी को अवैध साबित करने की कोशिश की है। साथ ही मामले की निष्पक्ष और स्वतंत्र जांच की मांग की गई है। सुनवाई के दौरान राज्य सरकार की ओर से याचिका में तकनीकी त्रुटियों और प्रस्तुत दस्तावेजों पर आपत्ति दर्ज कराई गई। इसके बाद हाईकोर्ट ने याचिकाकर्ता को कमियां दूर करने और जन्म प्रमाणपत्र की स्पष्ट प्रति रिकॉर्ड पर पेश करने के लिए 10 दिन का समय दिया। मामले की अगली सुनवाई 23 जून को होगी। याचिका में दावा किया गया है कि युवती बालिग है, लेकिन उसे नाबालिग दिखाने के लिए उसके छोटे भाई के दस्तावेजों का इस्तेमाल किया गया। आरोप है कि जन्म रिकॉर्ड में बदलाव कर उसके खिलाफ कार्रवाई का आधार तैयार किया गया। गौरतलब है कि युवती की मुलाकात केरल में फिल्म शूटिंग के दौरान फरमान से हुई थी और दोनों ने मार्च 2026 में विवाह किया था। बाद में उम्र को लेकर विवाद सामने आया, जिसके बाद पुलिस ने फरमान के खिलाफ पॉक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज किया था। अब हाईकोर्ट में दायर याचिका के जरिए दंपति ने पूरे मामले की निष्पक्ष जांच और अपने दस्तावेजों की वैधता बहाल करने की मांग की है।

20 जून को इंदौर को मिलेगा मेट्रो के नए कॉरिडोर रुट का नया तोहफा

केंद्रीय मंत्री खट्टर करेंगे शुभारंभ, अगले दिन से यात्री सफर करेंगे

इंदौर। शहरवासियों के लिए मेट्रो से जुड़ी बड़ी खुशखबरी है। इंदौर मेट्रो की येलो लाइन के दूसरे चरण के संचालन की तैयारियां अंतिम दौर में पहुंच गई हैं। प्रस्तावित कार्यक्रम के अनुसार 20 जून को मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव और केंद्रीय आवास एवं शहरी कार्य मंत्री मनोहर लाल खट्टर नए मेट्रो खंड का शुभारंभ करेंगे। इसके बाद 21 जून से यात्रियों के लिए नियमित सेवाएं शुरू होने की संभावना है। नया मार्ग सुपर कॉरिडोर-2 स्टेशन से रेडिसन चौराहे तक विकसित किया गया है।

मेट्रो प्रबंधन द्वारा किराया,ट्रेनों की आवृत्ति और समय-सारिणी को लेकर मंथन किया जा रहा है। अधिकारियों के अनुसार जल्द ही अंतिम निर्णय घोषित किया जाएगा। इस कॉरिडोर के शुरू होने से शहर के लाखों लोगों को लाभ मिलने की उम्मीद है। प्रारंभिक आकलन के अनुसार 4 से 6 लाख नागरिक सीधे तौर पर इस सेवा से जुड़ेंगे, जबकि फीडर बस और अन्य सार्वजनिक परिवहन के समन्वय के बाद यह संख्या 10 लाख तक पहुंच सकती है। नया मेट्रो मार्ग गांधी नगर, लवकुश नगर, सुखलिया, विजय नगर, स्कीम-78 और रेडिसन क्षेत्र को बेहतर कनेक्टिविटी प्रदान करेगा। इसके अलावा आईटी कंपनियों,विशेष आर्थिक क्षेत्र (सेज), शैक्षणिक संस्थानों और एयरपोर्ट तक पहुंच आसान होगी। इससे नौकरीपेशा लोगों,विद्यार्थियों और यात्रियों का समय बचेगा। मेट्रो विस्तार की रफ्तार के मामले में इंदौर प्रदेश में अग्रणी बना हुआ है।

केसीसी लोन रिन्यू कराने के लिए 20 हजार मांगे, लोकायुक्त के हाथ आए

गौतमपुरा में ट्रैप की कार्रवाई, रिश्वत लेते दो रंगे हाथ गिरफ्तार

इंदौर। किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) लोन के नवीनीकरण के बदले 20 हजार रुपए की रिश्वत मांगना सेवा सहकारी संस्था के दो कर्मचारियों को महंगा पड़ गया। लोकायुक्त इंदौर की टीम ने शुक्रवार को गौतमपुरा क्षेत्र स्थित सेवा सहकारी संस्था मर्यादित अत्याना में दबिश देकर दोनों आरोपियों को रिश्वत लेते हुए रंगे हाथ गिरफ्तार कर लिया। लोकायुक्त पुलिस के अनुसार ग्राम कुनघारा निवासी किसान जाकिर हुसैन पटेल ने शिकायत दर्ज कराई थी। उन्होंने वर्ष 2024 में केसीसी योजना के तहत 2 लाख रुपए का ऋण लिया था। ऋण का नवीनीकरण कराने के लिए उन्हें ब्याज सहित करीब 2.30 लाख रुपए जमा करना थे। आरोप है कि इसके बावजूद संस्था के कर्मचारियों ने लोन रिन्यू करने के एवज में 20 हजार रुपए की रिश्वत की मांग की।

बिछाया गया जाल

लोकायुक्त ने शिकायत मिलने के बाद रिश्वत मांगने की पुष्टि के लिए सत्यापन कराया। शिकायत सही पाए जाने पर ट्रैप दल गठित किया गया। योजना के तहत कार्रवाई करते हुए संस्था के कंप्यूटर ऑपरेटर एवं प्रभारी समिति प्रबंधक अमन जोशी तथा सहायक समिति प्रबंधक रमेशचंद्र पंड्या को किसान से 20 हजार रुपए लेते हुए पकड़ लिया गया।

अधिनियम के तहत मामला दर्ज

महानिदेशक लोकायुक्त योगेश देशमुख और उप पुलिस महानिरीक्षक मनोज कुमार सिंह के निर्देशन में हुई इस कार्रवाई के बाद दोनों आरोपियों के खिलाफ भ्रष्टाचार निवारण (संशोधन) अधिनियम-2018 की धारा 7 के तहत प्रकरण दर्ज किया गया है। मामले की आगे जांच जारी है। लोकायुक्त की इस कार्रवाई से सहकारी संस्थाओं में हड़कंप मच गया है।

इंदौर-प्रयागराज के लिए नई स्पेशल ट्रेन, लेकिन रफ्तार ने उठाए सवाल

मक्सी से ग्वालियर तक 8.25 घंटे के बजाए 14.20 घंटे लगेंगे

इंदौर। रेलवे ने इंदौर और सूबेदारगंज (प्रयागराज) के बीच यात्रियों की सुविधा के लिए 15 जून से नई स्पेशल ट्रेन चलाने की घोषणा की है। इस ट्रेन से इंदौर, ग्वालियर और प्रयागराज के यात्रियों को अतिरिक्त विकल्प मिलेगा, लेकिन ट्रेन का टाइम-टेबल सामने आते ही इसकी यात्रा अवधि को लेकर सवाल खड़े हो गए हैं। दरअसल, मक्सी से ग्वालियर के बीच इस स्पेशल ट्रेन को 14 घंटे 20 मिनट का समय दिया गया है। इसी मार्ग पर चलने वाली अन्य नियमित ट्रेनें यह दूरी लगभग 8 घंटे 25 मिनट में पूरी कर रही हैं। ऐसे में यात्रियों को इस स्पेशल ट्रेन में 6 घंटे से अधिक अतिरिक्त समय यात्रा में बिताना पड़ेगा। बुकिंग शुरू होने के बाद जब यात्रियों ने ट्रेन का विस्तृत समय देखा तो कई लोगों ने इस पर आपत्ति जताई। मामला रेलवे अधिकारियों तक भी पहुंचा है। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार ट्रेन इंदौर से रात 8.30 बजे रवाना होगी और रात 11 बजे मक्सी पहुंचेगी। इसके बाद ग्वालियर पहुंचने में उसे अगले दिन दोपहर 1.20 बजे तक का समय लगेगा।

मक्सी से ग्वालियर तक धीमी रहेगी

रेलवे विशेषज्ञ का कहना है कि मक्सी-ग्वालियर सेक्शन में ट्रेन की धीमी गति का मुख्य कारण इस मार्ग पर पहले से चल रही नियमित ट्रेनों का दबाव है। उनके अनुसार इस सेक्शन में रेलवे के पास पर्याप्त पाथ उपलब्ध नहीं है, जिसके कारण स्पेशल ट्रेन को कई स्थानों पर अन्य ट्रेनों को प्राथमिकता देने के लिए रोका जा सकता है। उन्होंने बताया कि स्पेशल ट्रेनों के संचालन में अक्सर परिचालन संबंधी कारणों, क्रॉसिंग और व्यस्त रेलखंडों पर मार्ग उपलब्ध कराने के लिए अतिरिक्त समय रखा जाता है। इसी वजह से इस ट्रेन के शेड्यूल में भी अधिक समय जोड़ा गया है। कई स्टेशनों पर ट्रेन को इंतजार करना पड़ सकता है और कुछ हिस्सों में इसकी गति भी सीमित रहेगी। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि रेलवे चाहे तो इस ट्रेन के टाइम-टेबल की दोबारा समीक्षा कर यात्रा अवधि कम कर सकता है। वर्तमान में इस ट्रेन में इंदौर-ग्वालियर और इंदौर-प्रयागराज खंड के यात्रियों की सबसे अधिक रुचि दिखाई दे रही है।

यह रहेगा ट्रेन का शेड्यूल

ट्रेन संख्या 04170 इंदौर-सूबेदारगंज स्पेशल रात 8.30 बजे इंदौर से रवाना होगी और अगले दिन रात 8 बजे सूबेदारगंज पहुंचेगी। वहीं ट्रेन संख्या 04169 सूबेदारगंज-इंदौर स्पेशल सुबह 5 बजे रवाना होकर अगले दिन सुबह 4.55 बजे इंदौर पहुंचेगी। हालांकि यात्रियों के बीच सबसे अधिक चर्चा मक्सी से ग्वालियर के बीच लगने वाले असामान्य रूप से लंबे समय को लेकर हो रही है, जिसे लेकर रेलवे से पुनर्विचार की अपेक्षा की जा रही है।

पुस्तक समीक्षा

डॉ दिनेश पाठक
(वरिष्ठ पत्रकार और समीक्षक)

जब निराला ने कहा 'लिखने से कुछ नहीं होता !'

नवंबर 1960 की एक सर्द सुबह इलाहाबाद में युवा शैवाल सत्यार्थी की भेंट पंडित सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' से होने पर जब उन्होंने अपनी ऑटोग्राफ बुक उनकी ओर बढ़ाकर कुछ लिखने का निवेदन किया, तो निराला जी बोले, मैं आजकल कुछ नहीं लिखता, लिख ही नहीं पाता। जब उनसे हस्ताक्षर करने का अनुरोध किया तो बोले 'नहीं बेटे, नहीं ! कहा न, हमारे लिखने से कुछ नहीं होता इसलिए हमने लिखना ही बंद कर दिया ! लगभग एक वर्ष बाद निराला जी का अवसान हो गया। इस प्रकार हिन्दी साहित्य के सूर्य से उनकी सिर्फ मुलाक़ात ही हो पाई बात नहीं, लेकिन उस अल्प मुलाकात में भी निराला जी की वेदना उभर आई, 'हमारे लिखने से कुछ नहीं होता, इसलिए हमने लिखना ही बंद कर दिया। दरअसल, यह अहसास कभी न कभी हर लेखक को होता है कि लिखने से कुछ नहीं होता !

प्रस्तुत पुस्तक 'बातें मुलाकातें' में लेखक ने सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' से लेकर वृंदावनलाल वर्मा, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा, विष्णु प्रभाकर, उपेन्द्रनाथ अश्क, डॉ रामकुमार वर्मा, सुमित्रानंदन पंत, नीरज, भारत भूषण या डॉ हरिवंशराय बच्चन, सभी की अंतर्यात्रा, उनकी साहित्य सृजन की प्रक्रिया, आत्म साक्षात्कार, प्रेरणा और अंतर्द्वंद्व को उन्होंने सहज ही शब्दों के बिम्ब प्रदान कर भावनाओं के इन्द्रधनुष के माध्यम से उनके सृजन की सतरंगी मार्मिकता और संप्रेषणीयता को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। बात दरअसल यह है, शैवाल ! लेखक 'लोनली मैन' होता है और बस, इसीलिए मैं अपने शून्य को भरने के लिये अनवरत लिखता हूँ। एक चीज खत्म हुई और दूसरी शुरू। यह कहते हुए, प्रख्यात साहित्यकार उपेंद्रनाथ अश्क ने शैवाल जी को यह भी बताया कि कोई चीज लिखकर, पहले वे उसे दराज में रख देते हैं। फिर लगभग एक महीने बाद उसे उठाते हैं। ठीक करने जैसा कुछ हुआ तो, उसे ठीक करते हैं और फिर, एक-दो महीने के लिये, जहाँ की तहाँ रख देते हैं। जब छपने लायक समझते हैं, तभी उसे भेजते हैं।' शैवाल लिखते हैं कि मुझे लगा कि लिखना महज एक शौक नहीं, फर्ज है और फर्ज के प्रति कितना ईमानदार होना चाहिए,यह कोई अश्क जी से सीखे।' बतौर लेखक शैवाल जी की यही ईमानदारी उनकी इस पुस्तक में उभर-उभर आती है। हिन्दी की साक्षात्कार विधा में मील का पत्थर बनी शैवाल जी की कृति 'बातें मुलाकातें' जीवन के प्रति गहरी समझ और रचनाधर्मिता का उत्सव मनाने की उनकी संकल्प शक्ति का पर्याय बन गयी है। वैचारिक उद्वेलन ही शैवाल जी को सरस्वती के इन वरद पुत्रों की दुनिया में घूमने को प्रेरित करता रहा और वे एक से एक उत्तुंग हिमालय की शिखरावली पर चढ़ते रहे, उसी कठिनाई से साक्षात्कार लेते रहे और साहित्य को समृद्ध करते रहे। सूर्यकांत त्रिपाठी निराला से लेकर वृंदावनलाल वर्मा, यशपाल, भगवतीचरण वर्मा, विष्णु प्रभाकर, उपेन्द्रनाथ अश्क, डॉ रामकुमार वर्मा, सुमित्रानंदन पंत हों या नीरज, भारत भूषण हों या डॉ हरिवंशराय बच्चन,सभी की अंतर्यात्रा, उनकी साहित्य सृजन की प्रक्रिया, आत्म साक्षात्कार,और अंतर्द्वंद्व को सहज ही शब्द शब्द में पिरो देने वाले रचनाकार शैवाल सत्यार्थी जी के इस संकलन के माध्यम से किया है। पाठक वर्ग भी उस अमर सृजन लोक में झाँक सकते हैं। उन महान रचनाकारों के जीवन की झांकी देख सकते हैं, उन्हें अनुभव कर सकते हैं जो हमारे लिये दुर्लभ था। यह सब गहरी वेदना और मर्मभेदी दृष्टि के बिना असंभव था।साहित्यकारों के पत्रों का सम्मान, उनका उल्लेख करना शैवाल जी की जीवन्तता और सतत साहित्य साधनारत रहने की अद्भुत बानगी है। उनका सृजन अनोखा है। इसने लेखकीय सृजनधर्मिता और पाठकों के बीच एक सेतु का निर्माण किया। अतुलनीय है शैवाल जी का यह योगदान।

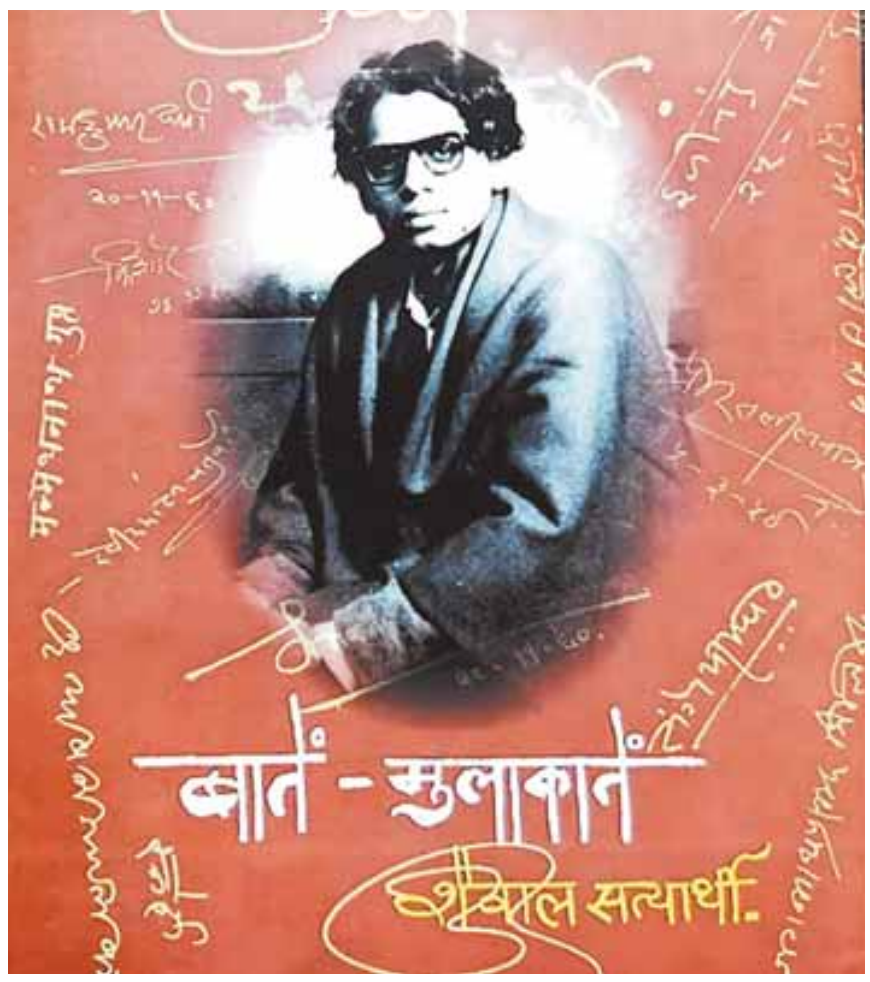

सदियों से लोग लिखते आ रहे हैं और आने वाली सदियों तक लिखते रहेंगे। हर एक लेखक की रचना प्रक्रिया और लेखकीय प्रेरणा अलग होती है, लेकिन आखिर वह क्या होती है? इसी उत्सुकता ने पांचवे दशक के लगभग युवा लेखक शैवाल सत्यार्थी के मन में इन सरस्वती पुत्रों से रूबरू मिलकर कुछ सवाल जवाब करने की अभिलाषा जागृत की और बीसवीं सदी के तीन-चार दशकों में फैले उन्हीं सफल-असफल साक्षात्कारों ने 21वीं सदी में स्वरूप लिया पुस्तक 'बातें मुलाकातें' का।

पुस्तक – बातें मुलाकातें
लेखक - शैवाल सत्यार्थी
प्रकाशक - साहित्य साधना संसद ग्वालियर
पृष्ठ संख्या - 194
मूल्य–350/ रुपए

गीत

मोहन वर्मा

जागी आंखों देखे सपने सच में निकले झूठे
उम्मीदों के रंगी गुब्बारे बस पल भर में फूटे

बहुत गुमाँ था इन पर उन पर
और दुनियादारी पर
मीत बने और साथ चले जो
उनकी हुशियारी पर
मूरख बनकर छले गये हम और भरोसे टूटे
उम्मीदों के रंगी गुब्बारे बस पल भर में फूटे

परख न पाये नकली चेहरे
और भीतर की घातें
कैसे भोले थे हम भी ना
समझे उलझी बातें
ठगे हुए से खड़े रह गये, ऐसे अपनों ने लूटे
उम्मीदों के रंगी गुब्बारे बस पल भर में फूटे

किसको अब दोषी बतलायें
और किसे पहचानें
खुद को ही दें समझाईश
और खुद ही को जानें
अपनी नासमझी पर यारों खुद मानें खुद रूठें
उम्मीदों के रंगी गुब्बारे बस पल भर में फूटे

कहानी

डॉ. गरिमा संजय दुबे

लाड़की बाई

खटिया पर सोई अम्मा से जय साईं राम बोल मुस्कुरा देती, सोई हुई अम्मा 'आई गई, कहते हुए ल मख बठाड़ी द', अपने हाथ का सहारा दे बूढी अम्मा को वह बिठा देती है, चूल्हे पर गरम पानी कर उन्हें पीने को देती है, और बड़बड़ाती अपने काम में लग जाती है। गृहस्वामिनी तब तक शौच से आ चुकी होती है और चाय का पानी चढ़ाती है, अपनी किशोर वय भतीजी को भी घंटी बजा वह जगा देती है, 'गीता औ गीता उठो भाई', भतीजी जो की गाँव से यहां पढ़ने आई है को समझ ही नहीं आता कि उसे इतनी जल्दी क्यों जगा दिया जाता है । वैसे भी बूढ़ों और जवानों का नींद को लेकर महायुद्ध शाश्वत है, बूढों को नींद आती नहीं और जवानों की जाती नहीं । उस पर जल्दी उठने के ढेर से फायदे गिनवा कर प्रवचन चालू रहता और वह अलसाई सी भुनभुनाती सी आँख मलते खड़ी हो जाती ।

रोते हुए कुत्ते ऊँ ऊँ करते थक कर सो चुके थे, मस्जिद में अज़ान के स्वर हवा में तैरने लगे और साथ ही दरवाजे पर सांकल खड़क उठी । मस्जिद के पीछे वाली उस गली में सुबह बहुत जल्दी हो जाती थी । यूँ उस कस्बे में सभी ब्रह मुहूर्त में उठने के अभ्यासी थे । घर की मालकिन सांकल खोल कर शौच से निवृत होने गई थी । उन दिनों उस कस्बें में आधी रात को भी घर खुला छोड़ने पर भय नहीं होता था । पांच साढ़े पांच पर वह घर की पुरानी नौकरानी दरवाज़े पर दस्तक देती है, और अधिकार से घर में घुस जाती है ।

खटिया पर सोई अम्मा से जय साईं राम बोल मुस्कुरा देती, सोई हुई अम्मा 'आई गई, कहते हुए मख बठाड़ी द', अपने हाथ का सहारा दे बूढी अम्मा को वह बिठा देती है, चूल्हे पर गरम पानी कर उन्हें पीने को देती है, और बड़बड़ाती अपने काम में लग जाती है । गृहस्वामिनी तब तक शौच से आ चुकी होती है और चाय का पानी चढ़ाती है, अपनी किशोर वय भतीजी को भी घंटी बजा वह जगा देती है, गीता औ गीता उठो भाई, भतीजी जो की गाँव से यहां पढ़ने आई है को समझ ही नहीं आता कि उसे इतनी जल्दी क्यों जगा दिया जाता है । वैसे भी बूढ़ों और जवानों का नींद को लेकर महायुद्ध शाश्वत है, बूढों को नींद आती नहीं और जवानों की जाती नहीं । उस पर जल्दी उठने के ढेर से फायदे गिनवा कर प्रवचन चालू रहता और वह अलसाई सी भुनभुनाती सी आँख मलते खड़ी हो जाती । उस पर कभी वह देर कर दे तो लाड़की बाई को उसके कमरे का पंखा बंद करने की हिदायत थी । हाँ यही नाम था उस गृह कार्य सहायिका का लाड़की बाई, उसे सुनकर हंसी आती और बोलती किसकी लाड़ली होगी यह लाड़की बाई और भुनभुनाती उठ खड़ी होती । हो किसी की भी लाड़ली पर मेरी तो नहीं है, मौसी की चमची , लेकिन उम्र में बड़ी थी और मां ने बताया था गीता तुझे तो इसी ने अपनी गोद में नहलाया था, जब गीता पैदा हुई थी तो इसी ने उसकी और उसकी माँ की तीमारदारी की थी तो वह उसे कुछ कह नहीं पाती थी। शराबी पति और शराबी बेटे के साथ बैठ बराबरी से शराब पीती थी । उसका पोपला झुर्रियों से भरा मुँह और अपने गहरे महरून रंग से मेल खाते मेहरून रंग के ही कपडे, कोई आदिवासी थी और करीब 40 साल से उस घर में काम कर रही थी तो जाहिर सी बात है घर की सदस्य सी ही थी । फुद्दी सी फुदकती दोनों हाथों से ताली ठोकती दौड़ती हुई चलती थी, और बोलती जाती लाड़ की बाई आ गई, लाड़ की बाई आ गई, चा पिलाओ चा ।

जिस दिन वो नहीं आती नानी का दिन नहीं कटता, दारू पी के पड़ी होगी कहीं, या अपने पति को कूट के उसको डॉक्टर के यहाँ ले गई होगी, हाँ बराबरी से कुटाई भी कर देती थी उसके पति की, एक छोटा सा कच्चा घर, छोटा आंगन जिसके आस पास मिट्टी की दीवार बना ली थी उसने । जब काम पर आती सारा काम करती, कुएं से पानी खींच वहीं आंगन में नहा लेती और अपने कपड़े एक अलग रस्सी पर सुखा दूसरे घरों में काम करने चली जाती, घर में कोई पुरुष नहीं था, उस परिवार के लगभग हर घर में वह काम करती, एक एक सदस्य, रिश्तेदारी, किसके बच्चे कौन, कहां उसको सब जानकारी रहती, उसने अपने कुछ भारी बर्तन और थोड़े ढंग के कपड़े अपनी इस मालकिन के तीसरी मंजिल के भंडारे में रखवा रखे थे, कुछ पैसा जमा करवा रखती, यूं खाना पीना सब जगह से मिल जाता, बीमार होने पर वे परिवार वाले भी इलाज करवा देते, तो खर्च जैसा कुछ नहीं, कहते थे कि उसका लड़का पहली शादी का था और वह अभी किसी और मर्द के साथ रहती, लेकिन शराब उसकी हर शादी में मौजूद, ये दोनों बाप बेटे भी खूब पीते । नानी से न जाने कितनी बार झगड़ा हुआ तो भुनभुनाती हुई अपना समान लेकर दो चार दिन आती ही नहीं, इधर उसके न आने पर नानी की बेचैनी ऐसी जैसे कोई सगा संबंधी नहीं आया हो, चार पांच दिन बाद खुद काम पर आ जाती और नानी और लाड़की बाई का शिकायत, मनुहार, रूठने, मनाने का दौर चलता जो एक कप मीठी चाय के साथ सीज़फायर तक पहुँचता, उनका शीत युद्ध चलता रहता और अगली बार ऐसा मत करना पर समझौता हो जाता । वो शायद नानी की लाड़ली थी और नानी उनकी लाड़ली, यह रोचक अनूठा बंधन था ।

जब वह काम पर नहीं आती तो गीता को उसे ढूंढने भेजा जाता, उसके टूटे फूटे घर के पास वह क्या देखती कि तीनों मिलकर शराब पी रहे हैं, वह

भी पीकर टून्न रहती, कुछ लोग बताते कि पीकर वहां बैठी है, खूब गालियां देती बेटे और पति को, पहले वाले पति को भी और गालियां देते देते वहीं लुढ़क जाती अगली सुबह फिर हाज़िर, दस बीस रुपए मांग कर ले जाती खाना पीना करती और उसका जीवन चलता रहता।

गीता को लगता ऐसी मनहूस शकल पाई है इसने, इसका नाम लाड़की किसने रख दिया होगा।

इसको कौन लाड़ करता होगा

एक दिन पूछ ही लिया, आपका नाम किसने रखा लाड़कीबाई,

जाने किसने रखा वो, वह बोली

किसी ऐसे ने रखा होगा जो आपको बहुत लाड़ करता होगा, लाड़ की बाई, लाड़ की बाई है ना कहते हुए गीता ने उसकी तरफ देखा,

मुझे कौन लाड़ करता था, वह सोचने लगी, सोचते सोचते उसकी आंखें भर आई, ना मुझे तो कोई याद नहीं आता जो मुझे लाड़ करता हो, सौतेली मां भूखा रखती मारती थी, बाप दारू पीकर मरता था, भाई भी, धक्के देकर निकाल दिया, फिर वहीं पास के लड़के से लगन कर दिया, लाड़ तो वहां भी नहीं मिला, वह भी मारता, नई री कोई लाड़ नहीं करता था, जाने किसने नाम रख दिया लाड़ की बाई÷, कहते हुए वह जोर जोर से बर्तन घिसने लगी जैसे उसके ऊपर जमी कालिख को निकाल कर दम लेगी, जाने बर्तन की कालिख निकाल रही थी या अपने जीवन की ।

फिर आंसुओं भरा चेहरा उठा कर बोली, महारो नाम तो मार खाती बाई होनो चाय जे, नई, कहते हुए फिर कोयला लेकर बर्तन घिसने बैठ गई, गीता को लगा जैसे कोई दुखती रग छेड़ दी हो उसने, बुरा भी लगा, किसी के घाव को कुरेदना ठीक नहीं ।

कई बार किसी के अजीब होने पर हम सोचते हैं यह वैसा है ऐसा ही, क्या ही अच्छा हो कि यह जानने की कोशिश करें यह ऐसा क्यों हैं।

तब शायद शिकायत और आलोचना की जगह सहानुभूति ले ले और हम किसी व्यक्ति को ठीक से समझ पाएं, उस दिन गीता उदास रही, और उसके व्यवहार में उस दिन से लाड़ की बाई के लिए संवेदना जागने लगी ।

अब वह उससे चिढ़ती नहीं, बल्कि नरमी से पेश आती, समय बीतता गया, बीतता ही है, गीता तो ब्याह कर अपने घर बार की हो गई, मौसी भी नानी के देहांत के बाद अपना पैतृक मकान बेच कहीं तीर्थ में रहने चली गई । लोग कहीं भले चले जाएं, नगर गांव तो वहीं बने रहते हैं, और नगर गांव के साथ उन लोगों की यादें भी, अपने मायके की तरफ जब गीता जाती तो और सबके साथ लाड़की बाई का भी पूछती, कई बार वह मिल भी जाती, सबकी कुशल पूछ अपने पोपले मुंह से हंसती रहती, अबकी बार उसके मरने की खबर मिली, कैसे मरी तो पता लगा, बेटे और पति के साथ खूब दारू पीकर पड़ी थी तो उसी दारू के नशे में मौत आ गई, दारू से बड़ा लाड़ था उसको, लाड़ की बाई दारू की लाड़ की ही थी शायद।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पंकज प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग, 16, अल्फा इंडस्ट्रीयल पार्क, जाखिया, इंदौर, म.प्र.- 453555 से मुद्रित एवं 662, साई कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।
प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
रमेश रंजन त्रिपाठी
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अच्छा जमाना

लघुकथा

– कुसुम जैन

बहुत सी महिलाएँ शाम को कालोनी के बगीचे मे लगी बेंचों पर बैठ कर गप शप कर रही थी और उनके पोते पोती तथा अन्य बच्चे आस पास खेल रहे थे।

बात चल रही थी कि जमाना बहुत खराब है। एक दादी की उम्र की महिला? बोली - अरे हां ! हमें तो शाम ढलने के बाद घर से ही नही निकलने देते थे। कहते थे- जमाना खराब है। घर में ही रहो। किताबें पढो, सिलाई, कढाई, बुनाई सीखो और घर का काम करो, यही सब आगे काम आएगा। दूसरी महिला बोली- हां काकी ! हमें पढने की आजादी तो मिली। लडकियों वाले कालेज में जाने भी दिया। बीए. एम .ए. भी करने दिया लेकिन अच्छा जाब मिलने पर नौकरी नहीं करने दी।
कहा- शादी ब्याह करो। जमाना खराब है।
उन महिलाओं में 40-42 साल की प्रौढ़ता की दहलीज पर खड़ी एक महिला बोली - काकी ! वह जमाना अलग था?। देखो ! हमारी बेटी ने शहर में कोचिंग की और अब उसका आइआइटी चैन्नई में सिलेक्शन हो गया है।लेकिन उसके पापा अब डर रहे है।अखबार और मीडिया में अपहरण, गैंगरेप आदि की खबरें पढ़कर और माहौल देख कर कह रहे है कि इतनी दूर लड़की को कैसे भेजें? जमाना खराब है। इतने में दादी को घर ले जाने के लिए आई पोती, जो यह सब सुन रही थी। बोली- दादी ! जमाना अच्छा कब आएगा?

ग़ज़ल

सुन लेना

कमलेश कुमार दीवान

आप से लोग शिकायत भी करें सुन लेना
कोई इल्जाम यूं ,आयत भी करें, सुन लेना।
अपनी राहों मे मुश्किल है, बहुत आगे भी
कोई बदनाम यूँ, आफत भी करें, सुन लेना।
दौर वो भी तो था जब पार किए थे दरिया
सूखे पत्थर ,यूं हिकारत भी करें ,सुन लेना।
वक्त के साथ गुजर जाते हैं सारे लम्हात
सुबह से शाम ,यूँ सांसत भी करें ,सुन लेना।
यूं तो हर हाथ दुआ देता ही होगा 'दीवान'
आंसमा यूँ ही इनायत भी करें, सुन लेना।

विस्मृति

लघुकथा

स्वाति 'सखी' जोशी

हैलो सुमि, तुमने सुना? राजेश को 'अल्जाइमर ' हो गया है। उसकी याददाश्त बहुत कमजोर हो गई है और वह गिने-चुने लोगों को ही पहचान पाता है। गुमसुम - सा अपने आप में खोया रहता है। बोल- चाल भी बहुत कम हो गई है। आज शाम को पांच बजे हम सब एक ही शहर में रहने वाले सहपाठी कॉलेज में मिलने वाले हैं। समीर राजेश को भी लाने वाला है। शायद उसे कुछ याद आ जाये, या वह हमसे फिर जुड़ जाये। तुम आओगी ना? आँ...हाँ आउंगी सुमि का जवाब सुनकर,श्रद्धा ने चुटकी लेते हुए कहा, तुम तो जरूर आओगी। और हंसकर फोन रख दिया।

सुमि कॉलेज पहुँची , तो सब उनकी फायनल इयर की कक्षा में बैठकर पुरानी बातें याद कर रहे थे , खिलखिला रहे थे। लेकिन राजेश, चुपचाप बैठे , अलिप्त से सबको बस देख रहे थे। धीरे - धीरे जब सब अपनी दूसरी कक्षाओं में जाने लगे, तो सुमि ने राजेश के पास जाकर अपनी पर्स से एक चिट्ठी निकाली। राजेश, यह वही चिट्ठी है, जो तुमने मुझे इसी क्लास में किताब में छुपाकर दी थी। मैं तब डर और संकोच के मारे तुम्हें जवाब भी नहीं दे पाई थी। लेकिन मैंने आज तक इसे अपने पास संभाल कर रखा है।

राजेश ने चिट्ठी हाथ में ली, और कहा याद है।

जयंती पर विशेष

चित्रा माली

सहायक प्रोफेसर गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विवि क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता

हिंसक संघर्ष के पैरोकार यूथ आइकॉन अर्नेस्टो 'चे' ग्वेरा

'चे' ने अपनी 'मोटर साइकिल डायरीज' में लिखा है कि कैसे वे युवावस्था में अपने एक दोस्त के साथ लैटिन अमेरिका के देशों की यात्रा पर निकल गएथे। वे आगे लिखते हैं कि 1952 की इस रोमांचक यात्रा की शुरुआत तो नए अनुभवों की तलाश के लिए हुई थी लेकिन यात्रा की इस प्रक्रिया ने लैटिन अमेरिका की क्रूर हक़ीक़त से भी रूबरू करवाया। पेरू के मार्क्सवादी डॉक्टरह्यूगो पेस्के के दबाव में 'चे' ने कड़ी मेहनत करके अपनी मेडिकल की पढ़ाई पूरी की। इसके तुरंत बाद 1953 में 'चे' ने अपनी दूसरी यात्रा की शुरुआत की जो दिसंबर में ग्वाटेमाला में खत्म हुई। वहां से 'चे' ने अपने अंदर एकतरह का राजनीतिक बदलाव महसूस किया। इस समय यह देश व्यापक सामाजिक औरराजनीतिक बदलाव के दौर से गुजर रहा था।

अलेक्सिस कोर्डा के द्वारा खींची गई 'चे' की तस्वीर जिसमें वे एक फौजी कैप पहने हुए हैं और हल्की-बेग़री दाड़ी में दिख रहे है,क्रांति और विद्रोह की कालजयी छवि के रूप में सारी दुनिया में स्वीकार की जा चुकी है। 'चे' के समर्थक युवा इसी तस्वीर के टीशर्ट और बैग का इस्तेमाल भी बड़ी शिद्दत से करते हैं। 'चे' के प्रति एक अलग प्रकार के लगाव को महसूस किया जा सकताहै।

समूचे विश्व में रैडिकल और विद्रोही युवाओं के आइकॉन अर्नेस्टो 'चे' ग्वेरा का जन्म 14 जून 1928 को अर्जेंटीना के रोजारियो नामक स्थान पर हुआ था। बचपन में ही 'चे' दमा रोग के शिकार हो गए थे जिसके खिलाफ संघर्ष करते करते उनके भीतर बाहरी बाधाओं से संघर्ष करने की क्षमता का विकास हो गया था। 'चे' पर उनके माता-पिता का भी बहुत प्रभाव था। उनकी मां सेलिया अर्जेंटीना कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्य थी। पार्टी से जुड़ी होने के कारण पार्टी की बैठकें अक्सर 'चे' के घर पर हुआ करती थी। इन बैठकों ने 'चे' के विचारों को वामपंथी दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 'चे' मार्क्सवादी विचारक समर्पित क्रांतिकारी और छापामार युद्ध के सिद्धांतकार थे।

'चे' ने अपनी 'मोटर साइकिल डायरीज' में लिखा है कि कैसे वे युवावस्था में अपने एक दोस्त के साथ लैटिन अमेरिका के देशों की यात्रा पर निकल गएथे। वे आगे लिखते हैं कि 1952 की इस रोमांचक यात्रा की शुरुआत तो नए अनुभवों की तलाश के लिए हुई थी लेकिन यात्रा की इस प्रक्रिया ने लैटिन अमेरिका की क्रूर हक़ीक़त से भी रूबरू करवाया। पेरू के मार्क्सवादी डॉक्टरह्यूगो पेस्के के दबाव में 'चे' ने कड़ी मेहनत करके अपनी मेडिकल की पढ़ाई पूरी की। इसके तुरंत बाद 1953 में 'चे' ने अपनी दूसरी यात्रा की शुरुआत की जो दिसंबर में ग्वाटेमाला में खत्म हुई। वहां से 'चे' ने अपने अंदर एकतरह का राजनीतिक बदलाव महसूस किया। इस समय यह देश व्यापक सामाजिक औरराजनीतिक बदलाव के दौर से गुजर रहा था।

ग्वाटेमाला से 'चे' मैक्सिको सिटी गए और लातीनी अमेरिका के बहुत से प्रवासियों से मिले। जुलाई 1955 में उनके एक क्यूबाई दोस्त ने उनकी मुलाकात फ़िदेल कास्त्रो के भाई राउल कस्त्रों से करायी। 'चे' और राउल कस्त्रो दोनों इस बात पर सहमत थे कि इस क्षेत्र में सिर्फ सैन्य कार्यवाही द्वारा ही सत्ता हासिल की जा सकती है।'चे' ने ग्वाटेमाला के अपने अनुभवों से यही नतीजा निकाला था। फ़िदेल कस्त्रो से मुलाकात के बाद उनके बीच भी सैन्य कार्यवाही पर सहमति बनी।'चे' ने 'हिल्डा' की प्रेरणा से मार्क्सवाद का अध्ययन करना शुरू कर दिया था। फ़िदेल से मिलने के बाद 'चे' का उनके साथ एक तरफ तो गहरा राजनीतिक जुड़ाव कायम हुआ,लेकिन साथ में एक विचारधारात्मक अंतर भी बना रहा। फ़िदेल एक क्रांतिकारी राष्ट्रवादी थे जो अपनी प्रेरणाएं क्यूबाई राष्ट्रवाद के जनक और सिद्धांतकार 'जोसे मार्ती' से लेते थे। लेकिन 'चे' खुद कोकम्युनिस्ट घोषित करने के बाद भी राजनीतिक सिद्धांत की पड़ताल कर रहे थे। फ़िदेल के पास इन चीजों के लिए धैर्य नहीं था। 'चे' और फ़िदेल दोनों इस बात पर एकमत थे कि क्रांति में समर्पित क्रांतिकारियों की भूमिका बेहद अहमहोती है। फ़िदेल क्यूबाई कम्युनिस्ट पार्टी और उसकी नीतियों पर अपने संदेहके कारण इस नतीजें पर पहुंचे थे और 'चे' ग्वाटेमाला के अनुभवों के कारण। 2 दिसंबर 1956 को 'चे' और फ़िदेल 82 साथियों के दल के साथ गुपचुप तरीके से क्यूबा पहुंचे। लेकिन वहां जे-26-एम का सहयोग न मिल पाने के कारण ये लोग क्यूबा के शासक बतिस्ता के सैनिकों के हमले का शिकार हुए। इस दल के सिर्फ 19 सदस्य ही जीवित बच पाए। फ़िदेल और 'चे' अपने बचे-खुचे साथियों केसाथ अलग-अलग दिशाओं में जंगल की ओर भागे और 15 दिन बाद मिलकर नए सिरे से छापामार दस्ता तैयार करने का निर्णय लिया। यहां गौर करने वाली एक महत्वपूर्ण बात यह थी कि 'चे' के पास कोई फौजी प्रशिक्षण नहीं था। लेकिन अपने साहस और अनुशासनबद्धता के कारण जल्दी ही उन्होंने केंद्रीय सैन्य भूमिका हासिल कर ली। 1957 के शुरुआती हफ़्तो में किसानों के जुड़ने के कारण इस विद्रोही सेना का विस्तार हुआ। फ़िदेल के संगठन 'जे-26-एम' की गुरिल्लायुद्ध रणनीति की तरफदारी 'चे' ने भी की थी। सेना संगठित करने और दूसरी जगहों से लोगों को गुरिल्ला दस्ते में शामिल करने में 'चे' ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। क्यूबा की क्रांति के बाद 'चे' एक प्रमुख क्रांतिकारी नायक के रूप में उभरे। 'चे' को अनुशासन, वचनबद्धता और साहस के प्रतीक के रूप में देखा गया। क्रांति के प्रति किसानों के

समर्थन का सुनिश्चय करनेके लिए 'चे' ने खेतिहर सुधारों पर बहुत ज्यादा जोर दिया। वे जमीन का समाजीकरण भी करना चाहते थे। राजनीतिक रूप से 'चे' की रुचि समाजवादी परंपरा में थी। 'चे' आरंभ से ही क्यूबा की क्रांति को समाजवादी प्रक्रिया के रूप में देखते थे। 'चे' की मान्यता थी कि विद्रोही सेना और उसके प्रमुख कैडर क्रांति के मुख्य कर्ता है,वे सेना को वैगार्ड या हरावल दस्ते के रूप में देखते थे, हालांकि कम्युनिस्ट परंपरा में यह भूमिका क्रांतिकारी पार्टी को दी जाती है। 'चे' अमेरिका की सरकार को स्पष्ट रूपसे क्रांति का शत्रु मानते थे। अमेरिकी सरकार द्वारा क्यूबा की नाकेबंदी की आशंका पर फ़िदेल के कहने पर 'चे' ने 14 देशों की यात्रा की और क्यूबा के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर समर्थन जुटाया। अक्टूबर 1962 के मिसाइल संकट ने क्यूबा के प्रति सोवियत संघ के समर्थन को लेकर फ़िदेल और 'चे'दोनों ही आशंका से भर उठे थे।

'चे' ने सोवियत संघ पर निर्भरता और सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा समाजवाद की ओर संक्रमण की अर्थवादी व्याख्या का विरोध किया था। 'चे' ने दो स्तरीय कार्यक्रम अपनाने का सुझाव भी दिया था। पहला समाजवादी चेतना की बढ़ोतरी जिसमें भौतिक सुविधाओं के बजाए विचारों पर ज्यादा जोर देते हुए स्वैच्छिक श्रम की संस्कृति का विकास किया जाए। दूसरा महाद्वीपीय स्तर पर किसानों के समर्थन के आधार पर गुरिल्ला संघर्ष छेड़ा जाए। क्यूबा में क्रांति के बाद 'चे' निर्माणाधीन समाजवादी समाज और राज्य की केंद्रीय हस्ती बन कर उभरे,लेकिन जल्दी ही यहप्रकिया उनके क्रांतिकारी मिजाज को नाकाफी लगने लगी। उन्होंने पूरे लैटिन अमेरिका में साम्राज्यवाद के खिलाफ कई नए मोर्चे खोलने का आव्हान किया था।

क्यूबा की क्रांति के बाद क्यूबा को मान्यता देने वाले पहले देशों में से एक भारत भी था। क्यूबा की क्रांति के बाद,फिदेल कास्त्रो ने 'चे' को दो सप्ताह की यात्रा पर भारत भेजा था। 'चे' 30 जून 1959 को नई दिल्ली पहुंचे थे। 'चे' ने अगले दिन भारतीय प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के साथ मुलाकात की। नेहरू ने 'चे' को एक अखरोट की खुरपी में हाथीदांत से बने हैंडल वालीखुकरी भेंट की। वर्तमान में यह खुखरी हवाना (क्यूबा की राजधानी) में संरक्षित है। नेहरू से मुलाकात के बारे में 'चे' ने कहा था कि नेहरूहमसे एक पूर्व-परिचित पितामह की तरह मिले। वे क्यूबा के लोगों के समर्पण और संघर्ष में विशेष रुचि रखते है। दोनों प्रतिनिधिमंडलों ने यथाशीघ्राजनयिक मिशन स्थापित करने और व्यापार बढ़ाने पर सहमति जताई। 'चे' और क्यूबा प्रतिनिधिमंडल ने भारतीय रक्षा मंत्री वीके कृष्ण मेनन,वरिष्ठ रक्षा अधिकारियों एवं योजना आयोग के सदस्यों के साथ भी मुलाकात की। उन्होंने लघु-कुटीर उद्योग प्रदर्शनी ओखला औद्योगिक क्षेत्र, कृषि अनुसंधान संस्थान और राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला का भी दौरा किया। 'चे' ने नई दिल्ली में चिली के राजदूत के साथ मुलाकात की और ऑल इंडिया रेडियोके पत्रकार केपी भानुमति को साक्षात्कार भी दिया। 'चे' भारत से रवानाहोने से पहले कोलकाता भी गए थे।

'चे' हिंसक संघर्ष को प्राथमिकता देनेवालों में से थे। इसके बावजूद भी वे महात्मा गांधी के प्रशंसक थे। क्यूबा लौटने पर,'चे' ने लिखा, भारत में,युद्ध शब्द लोगों की भावना से इतना दूर है कि उन्होंने स्वतंत्रता के लिए अपने संघर्ष के कठिनतम क्षण में भी इसका इस्तेमाल नहीं किया। सामूहिक असंतोष की अहिंसात्मक अभिव्यक्ति के लिए किए गए महान आंदोलनों ने अंग्रेजी उपनिवेशवाद को उसभूमि को हमेशा के लिए छोड़ने पर मजबूर कर दिया,जिसे उसने पिछले डेढ़ सौ साल तक अपना गुलाम बना रखा था। जून 1960 में प्रकाशित अपने लेख ऑन सेक्रीफाइस एंड डेडीकेशन में 'चे' ने 'नए आदमी' का विचार पेश किया। नैतिक बल की खुराक पर चलने वाले इस नए आदमी के लिए छापामार युद्ध समर्पण और फौजी अनुशासन ही कम्युनिस्ट राजनीति का पर्याय है। 'चे' शहरों में चलने वाले आंदोलनों और मजदूर वर्ग की कार्यवाहियों को महत्व के लिहाज से दूसरे दर्जे का मानते थे। उनका विचार था कि क्रांतिकारी संघर्ष की बागडोर किसानों के हाथों में नहीं होनी चाहिए। किसानों को इस संघर्ष का समर्थन करना चाहिए और क्रांति के संचालन की जिम्मेदारी गुरिल्ला कम्युनिस्टों के पास रहनी चाहिए। उनकी प्रकाशित किताब 'गुरिल्ला वारफेयर' में भी 'चे' अनुशासन और आदेश पालन करने पर जोर देते हैं। आंतरिक लोकतंत्र के आधार पर समाजवाद की रचना करने के स्थान पर उनकी मान्यता थी कि आदेश और नियंत्रण के जरिये यह परियोजना पूरी की जा सकती है। 'चे' का स्पष्ट मत था किक्रांतिकारी सामाजिक बदलाओं में मुख्य भूमिका निभाते हैं ना कि वे सामाजिक शक्तियां जिनका वे प्रतिनिधित्व करते हैं। बोलीविया में एक विफल क्रांतिकारी मुहिम के बाद सीआईए के एजेंटों द्वारा 'चे' की हत्या कर दी गई। हत्या के इतने वर्षों बाद भी 'चे' समूची दुनिया के वामपंथियों और विद्रोही नौजवानों के बीच रैडिकलिज्म के प्रतीक बने हुए हैं।

फिल्म समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव के रबन्ध संचालक हैं।)

निरपेक्ष न्याय को तलाशती एक अच्छी फिल्म ' सिस्टम '

कहानी कई जगह उतनी मजबूत नहीं लगती जितनी लगनी चाहिए थी। फिल्म में संवेदनाएं हैं , अच्छे कलाकार हैं और कुछ सीन असर भी छोड़ते हैं , इससेफिल्म दर्शकों को लुभाती है । कहानी नेहा राजवंश (सोनाक्षी सिन्हा) की है, जो मशहूर वकील रवि राजवंश (आशुतोष गोवारिकर) की बेटी है। नेहा अपने पिता के साथ काम करना चाहती है, लेकिन रवि साफ कहते हैं कि वह किसी एहसान या रिश्ते की वजह से अपनी बेटी को आगे नहीं बढ़ाएंगे। उनका मानना है कि नेहा को पहले खुद को साबित करनाहोगा और अपने दम पर केस जीतने होंगे। इसी दौरान नेहा की मुलाकात सारिका (ज्योतिका) से होती है। सारिका एक स्टेनोग्राफर है, जो अपने घर की सारी जिम्मेदारियां अकेले सम्भाल रही है। उसका पति व्हीलचेयर पर है और जिंदगी उसके लिए आसान नहीं है।

समाज में प्रचलित एक सच का तथ्यगत विवेचन प्रस्तुत करती फिल्म -' सिस्टम ' इस बात की पड़ताल करती है कि एक ऐसे समाज में न्याय शायद ही कभी पूरी तरह से सही या गलत यानी ब्लैक एण्ड व्हाईट स्वरुप में सामने आता हो । जिस समाज में रसूख, विशेषाधिकार और सत्ता अक्सर नतीजों को तय करती हो वहाँ निरपेक्ष तौर पर न्याय की उम्मीद करना सम्भव ही नहीं है । इस एक केन्द्रीय विचार को लेकर फिल्म की मूल कहानी में जबरदस्त सम्भावनाएं हैं और इस पर यह फिल्म खरी भी उतरती है मगर कभी-कभी यह कोर्टरूम के टकरावों की भावनात्मक गहराई को पूरी तरह से उभारने में थोड़ी कमज़ोर पड़ जाती है। फिर भी ' सिस्टम ' एक दिलचस्प और सोचने पर मजबूर करने वाले कानूनी ड्रामा के तौर पर उभरती है, जिसे सोनाक्षी सिन्हा और ज्योतिका के दमदार अभिनय ने नई ऊंचाई दी है।

आजकल कोर्टरूम ड्रामा फिल्मों में या तो बहुत ज्यादा ड्रामा होता है या फिर उन्हें जरूरत से ज्यादा रोमिंचक थ बनाने की कोशिश की जाती है। यह फिल्म इन दोनों चीजों से थोड़ा अलग रहने की कोशिश करती है। फिल्म ,कोर्ट में होने वाली बहसों से ज्यादा उन लोगों पर केन्द्रित है, जो इन कानूनों लड़ाईयों के बीच अपनी निजी जिन्दगी से भी जूझ रहे हैं। अच्छी बात यह है कि फिल्म अपने चरित्रों पर पूरा ध्यान देती है, लेकिन दिक्कत यह है कि कहानी कई जगह उतनी मजबूत नहीं लगती जितनी लगनी चाहिए थी। फिल्म में संवेदनाएं हैं, अच्छेकलाकार हैं और कुछ सीन असर भी छोड़ते हैं , इससेफिल्म दर्शकों को लुभाती है।

कहानी नेहा राजवंश (सोनाक्षी सिन्हा) की है, जो मशहूर वकील रवि राजवंश (आशुतोष गोवारिकर) की

बेटी है। नेहा अपने पिता के साथ काम करना चाहती है, लेकिन रवि साफ कहते हैं कि वह किसी एहसान या रिश्ते की वजह से अपनी बेटी को आगे नहीं बढ़ाएंगे। उनका मानना है कि नेहा को पहले खुद को साबित करनाहोगा और अपने दम पर केस जीतने होंगे। इसी दौरान नेहा की मुलाकात सारिका (ज्योतिका) से होती है। सारिका एक स्टेनोग्राफर है, जो अपने घर की सारी जिम्मेदारियां अकेले सम्भाल रही है। उसका पति व्हीलचेयर पर है और जिंदगी उसके लिए आसान नहीं है। नेहा को धीरे-धीरे समझ आता है कि सारिका सिर्फ टाइपिंग का काम नहीं जानती, बल्कि उसे कानून और मुकदमों की भी अच्छी समझ है। वह उसे अपने साथ काम करने का अवसर देती है।इसके बाद दोनों साथ में कई केस पर काम करती हैं और उनकी प्रोफेशनल पार्टनरशिप मजबूत होती जाती है। लेकिन कहानी का असली मोड़ तब आता है, जब एक ऐसा केस सामने आता है जिसमें नेहा को अपने ही पिता के खिलाफ कोर्ट में खड़ा होना पड़ता है। इसके बाद फिल्म सिर्फ एक कानूनी लड़ाई नहीं रहती, बल्कि रिश्तों, ईगो और खुद कोसही साबित करने की लड़ाई बन जाती है।

फिल्म की सबसे बड़ी ताकत इसका अभिनय है। ज्योतिका ने बहुत अच्छा काम किया है। उनके चरित्र में एक थकान भी दिखती है और मजबूती भी। कई जगह वह बिना ज्यादा डायलॉग के भी सीन को असरदार बना देती हैं। फिल्म खत्म होने के बाद भी उनका किरदार याद रहता है।सोनाक्षी पिछले कुछ साल में अपने रोल्स को लेकर ज्यादा प्रयोग करती नजर आई हैं और यहां भी वह पहले से ज्यादा कंट्रोल्ड परफॉर्मेंस देती हैं। आशुतोष गोवारिकर का रोल ज्यादा बड़ा नहींहै, लेकिन वह अपने हिस्से में असर छोड़ते हैं।

फिल्म में अश्विनी अय्यर तिवारी का निर्देशन सन्तुलित है। अच्छी बात यह है कि वह फिल्म को जरूरत से ज्यादा लाउड नहीं बनातीं। कोर्टरूम वाले सीन भी काफी सामान्य तरीके से रखे गए हैं, जो फिल्म को थोड़ा वास्तविक महसूस कराते हैं। लेकिन फिल्म की सबसे बड़ी कमजोरी इसकी पटकथा है। कई बार ऐसा लगता है कि कहानी कुछ बड़ा कहना चाहती है, लेकिन वहाँ तक पहुंच नहीं पाती। कुछ सबप्लॉट आते हैं और अचानक खत्म हो जाते हैं। कुछ ट्विस्ट पहले से अंदाजा हो जाते हैं और क्लाइमैक्स भी उतना मजबूत असर नहीं छोड़ता जितनी उम्मीदबनती है। फिल्म की रफ्तार भी थोड़ी धीमी है। थिएटर में बैठकर देखने पर कुछ हिस्से लम्बे लग सकते हैं, लेकिन ओटीटी पर शायद यह ज्यादा बेहतर अनुभव दे।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

संस्कृति, संस्कार एवं भारतीय कला के मायने

भारतीय कला हमेशा से समय के साथ को दर्शाती रही है और फिर भारतीय ही क्यों लगभग हर देश की कला तत्कालीन समय के मर्म और मुद्दों को उठाती है, हो सकता है कुछ कलाकार कुछ विशेष के चक्कर में कुछ समूह के साथ वाद को बदलने के प्रयास में भी रहते हों और उनकी कृतियां समय के बाकी कलाकारों से अलग रास्ते पर चल रही होती हों लेकिन जो उस समय के हिसाब से चल रहे हैं उनको भी तो नकारा नहीं ही जा सकता। हां इससे इतर जब कला में भारतीयता की भी बात आती है तब कथा चित्रण और संस्कृति पर भी विचार किया जाने लगता है, कला संबंधी अभिप्राय और अलंकरणों पर भी बात होने लगती है। भरहुत, बोधगया से लेकर कोणार्क, सांची, सारनाथ, मथुरा, अजंता, एलोरा या फिर खजुराहो तक में कथा चित्रण के साथ ही अभिप्राय और अलंकरणों की अधिकता है जो संपन्नता को दर्शाती है हालांकि कहीं कहीं अलंकरण की अधिकता बोझिल सी बन पड़ी है पर ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर हम बात करें तो प्राचीन ग्रंथों पर गजब की पकड़ होती थी कलाकारों की फलतः हम कह सकते हैं कि तब कलाकार अभ्यास के साथ ही अध्ययन भी खूब किया करते थे। कला एवं साहित्य के आपसी मेल मिलाप का असर कहें या एक दूसरे में खो जाने की मानसिकता का प्रतिफल पर सच्चाई यही है कि तब कृतियों से लोगों का जुड़ाव ज्यादा हो पाता था। कृतियों के साथ पूरा कथानक जुड़ा होता था। धार्मिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि कोई सी भी रही हो पर कलाकार उसके कथानक को आत्मसात करने के बाद ही अपने सृजन में जुटता था। कृतियों में देवांगना, शालभंजिका, प्रेक्षणिका, मातृदेवी, सिंह, या फिर ऐसे ही तमाम और भी उत्कीर्ण या फिर अंकित आकृतियां भारतीय कला के समृद्धि की कारण रही हैं। किसी विचार या भाव को दृश्य रूप प्रदान करना ही कला का मुख्य कार्य रहा है कथा चित्रण भी इसी का विस्तारित रूप है। कथा चित्रण और संस्कृति पर चर्चा के पूर्व संस्कृति पर दृष्टिपात बहुत जरूरी है। संस्कृति समाज का एक अभिन्न अंग है जिससे समाज और भी निखर कर परिष्कृत होता है। संस्कृति ही है जो समाज को पीढ़ी दर पीढ़ी निखरने के मार्ग प्रशस्त करती है तथा अच्छे व बुरे को विलग करने की विलक्षण शक्ति प्रदान करती है। कला और संस्कृति यदि अपभ्रंशित हो गयी तो समाज खोखला हो जाता है, रीढ़ विहीन हो जाता है, अतः हमें अपनी संस्कृति को बचाकर, संवार कर तथा परिष्कृत रूप में सुधार कर हमेशा आने वाली पीढ़ी को सौंपना चाहिए ताकि ऐसे ही कुछ सुधार कर वो अपने आगे की पीढ़ी को दे सकें। संस्कृति को बचाने का कार्य करती है कला या दूसरे शब्दों में कहें तो कथा चित्रण भी। कला में ही लोक के सांस्कृतिक परिवेश, परंपरा की विस्तारित व्याख्या होती है। खाली दीवारों को अशुभ मानने की परंपरा भी भारत मे रही है। सांस्कृतिक, मांगलिक आदि शुभ आयोजनों में अलंकृत, विवरणात्मक आदि कृतियों का सृजन और ऐसे मौकों पर सभी का कलाकार बन जाना और दर्शकों का स्वतः जुड़ाव हो जाना भारतीय कला की थाती रही है जो लोक संस्कृतियों के माध्यम से आज भी जिंदा है। किसी भी पारंपरिक, सांस्कृतिक मौकों पर सभी घरों में चित्रों का निर्माण वो भी आम जनमानस के द्वारा कला के आम भाषा में सब कथा चित्रण के ही अंग तो हैं। स्वास्तिक के प्रयोग से लेकर शादी-विवाह में दीवारों पर बनीं कृतियां, पूजा-पाठ और चौक पुरना, कोहबर के चित्रण में देशज अंदाज में ही सही पर हर चित्र में कथा होती है, कुछ में प्राचीन तो कुछ में आधुनिक कथानक को भी ढाला जाता है पर कथा होती जरूर है।

संस्कृति सामाजिक विकाश को प्रेरणा प्रदान करती है। संस्कृति के चर्चा पर के. एम. मुंशी के बोल- हमारे रहन-सहन के पीछे जो मानसिक अवस्था, मानसिक प्रवृत्ति है, जिसका उद्देश्य हमारे जीवन को परिष्कृत, शुद्ध और पवित्र बनाना है तथा अपने लक्ष्य की प्राप्ति करना है, वही संस्कृति है। रही बात भारतीय कला में संस्कृति की तो झुठलाया नही जा सकता कि प्रागऐतिहासिक से लेकर आज तक हमारे यहां के हर कला में संस्कृति की झलक बेशुमार प्रवाहित है। कथा चित्रण और संस्कृति के विषय में यह विदित है कि रामायण,

महाभारत, गीतगोविंद, बालगोपाल तमाम पर आधारित चित्र पाये गये। अजन्ता, बाघ, जोगीमारा आदि में अधिकतर चित्र किसी न किसी घटना पर ही आधारित है जहां पर चित्रों के साथ ही घटना का भी जिक्र किया गया है। इलेस्ट्रेशन भाषाओं के डोर में नही बंधा है बल्कि किसी भी देश, दुनिया, धर्म के लोग इसे आसानी से समझ सकते हैं और समझ कर अपने कर्तव्य को समाज के अनुकूल परिवर्तित कर सकते हैं।

जोगीमारा गुफा जिसे पहले एक देवदासी का निवास समझा गया था, हालांकि था नही, से प्राप्त शिलालेखानुसार-यह वरुण देवता का मन्दिर था और जैन धर्म का इसकी कला पर प्रभाव था, वरुण देवता के सेवा में ''सुतनुका'' नामक देवदासी रहती थी। इनसे सम्बन्धित कहानियों का चित्रण जोगीमारा में मिलता है। जोगीमारा में ही संभवतः पौराणिक गजग्रह कथा का चित्रण भी प्राप्त हुआ है। अजंता से स्तूप पूजा का जो चित्र प्राप्त हुआ है जिसमे लगभग सोलह व्यक्तियों का समूह दर्शाया गया है वह भी कथा पर ही आधारित है जहां किसी राजा अथवा श्रेष्ठी द्वारा चैत्य को बनवा कर संघ को भेंट देने के समारोह की घटना वर्णित है। गुफा संख्या दस के साम जातक का चित्र भी साम नामक व्यक्ति के अपने अंधे माता-पिता की सेवा पर आधारित है जो श्रवण कुमार के कहानी से पूर्णतः मेल खाती हुई सी है। 'मरणासन्न राजकुमारी' भी कथा पर ही आधारित है जिसको तपस्वी कलाकारों ने सजीवता के शिखर पर ला खड़ा किया था जिसके बारे में ग्रिफिक्स महोदय का मत- फ्लोरेंस का चित्रकार इससे अच्छा रेखांकन कर सकता था और वेनिस का कलाकार अच्छे रंग भर सकता था, किन्तु दोनो में से कोई इससे अधिक सुंदर भाव का प्रदर्शन नही कर सकता था। उन्ही के दूसरे शब्दों में- भावना, करुणा तथा कथा चातुर्य की दृष्टि से इससे बढ़कर कला इतिहास में कोई प्रमाण नही है। अजन्ता के लगभग सभी चित्र किसी न किसी घटना या कहानी पर ही आधारित है, मतलब कथा चित्रण का ही एक रूप है अजन्ता। पाल शैली में भी साधनमाला, गन्धव्यूह, करनदेवगुहा, पंचशिखा जैसी पोथियां प्राप्त हुई हैं जो कथा चित्रण युक्त हैं। गुजरात में बसंत बिलास नामक दृष्टांक चित्रण प्राप्त होता है जो कालीदास की रचना ऋतुसंहार पर आधारित है जिसमे विशेषतः फाल्गुन मास का मोहक चित्रांकन हुआ है, कविराज विल्हण और उनकी प्रेयसी चम्पावती की प्रणयलीला का चित्रांकन विल्हण कृत चौर पंचाशिका में अंकित है। मार्कण्डेय पुराण, दुर्गाशप्तसती, रतिरहस्य, कामसूत्र सम्बन्धी चित्र जैन कलाकारों द्वारा निर्मित किये गये। अगर देखा जाय तो रतिरहस्य, दुर्गाशप्तसती, बालगोपालस्तुति आदि से सम्बन्धित शैली के चित्रों का निर्माण सातवीं शताब्दी से ही गुजरात, मारवाण में होने लगा था। राजस्थान तो चित्रों और शैलियों का गढ़ रहा है जिस पर कई-कई आलेख तैयार किया जा सकता है। मुगल कालीन चित्रावलियों में हम्जानामा भी विशेष है जिसके चित्र सूती कपड़े पर बनाये गये थे। अकबरनामा भी कम महत्वपूर्ण नही है, अनवार-ए-सुहैली, रम्जानामा, आदि भी कथा चित्रण के इतिहास को बखूबी बयां करते से प्रतीत होते हैं। भारतीय कला में संकेतों का भी खूब बोलबाला रहा है जिसके पीछे भी कोई न कोई कथानक ही कार्य करती रही है। पूर्णघट या भद्रकलश से लेकर मांगलिक प्रतीकों में श्रेष्ठ स्वास्तिक चिन्ह जिनके बारे में कहा जाता है कि यह सूर्य का प्रतीक है, जीवन में प्रकाश फैलाने का श्रोत सूर्य हैं फलतः प्रकाश, विकास के भाव से स्वास्तिक का जुड़ाव स्वतः मान्य हो जाता है। चतुर्भुजी आकार के वजह से इसे चार दिशाओं के मूर्त रूप में भी देखा जाता है मतलब साफ है कि स्वास्तिक की पूरी व्याख्या के पीछे संकेत और संकेत के पीछे लंबा कथानक है। ब्राह्मण, बौध, जैन किसी भी आधार पर कृतियों को देखा और परखा जाय तो कहीं न कहीं कथानक जरूर होगा। शंख, गदा, पुष्प, चक्र जैसे हजारों प्रतीकों को चित्रों में प्रयोग में लाया गया है और सभी के पीछे कथानक है, सभी के पीछे संस्कृति है हां समय के साथ प्राचीनता से नवीनता का फर्क जरूर दिखाई देगा पर कला निरंतर इन्हीं सभी परिवर्तनों के बीच अपनी यात्रा पूरी करती रहती है, कलाकार और तमाम वाद साथ आते और साथ छोड़ते रहते हैं जबकि कला समय की भांति निरंतर प्रगतिशील रहते हुए आगे बढ़ रही होती है।

वरिष्ठ साहित्यकार देवेन्द्र सिंह सिसौदिया को साहित्य अकादमी का प्रादेशिक कृति सम्मान

साहित्य एवं हिंदी भाषा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए अनेक प्रतिष्ठित सम्मानों से अलंकृत किया जा चुका है

धार। साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश शासन द्वारा कैलेण्डर वर्ष 2024 के अखिल भारतीय एवं प्रादेशिक कृति पुरस्कारों की घोषणा कर दी गई है। घोषित पुरस्कारों में वरिष्ठ साहित्यकार देवेन्द्र सिंह सिसौदिया की लघुकथा कृति 'शुभ मुहूर्त' का चयन प्रादेशिक जैनेन्द्र कुमार 'जैन' (लघुकथा) सम्मान के लिए किया गया है। सम्मान के अंतर्गत 51,000 की सम्मान राशि, शॉल, श्रीफल, स्मृति-चिह्न एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया जाएगा।

लगभग चार दशकों से हिंदी साहित्य में सक्रिय देवेन्द्र सिंह सिसौदिया ने लघुकथा, व्यंग्य, कविता और आलेख जैसी विभिन्न विधाओं में उल्लेखनीय लेखन किया है। धार से वर्ष 1984 से प्रारंभ हुई उनकी साहित्यिक यात्रा में अब तक देश की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में 800 से अधिक रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। उनकी रचनाओं का प्रसारण आकाशवाणी, इंदौर से भी नियमित रूप से होता रहा है।

एम.फिल., एल.एल.बी. तथा भारतीय बीमा संस्थान, मुंबई से एसोसिएट उपाधि प्राप्त सिसौदिया भारतीय जीवन बीमा निगम में राजभाषा अधिकारी (प्रशासनिक अधिकारी) के पद से सेवानिवृत्त हैं। उन्होंने निगम की राजभाषा पत्रिका 'मालविका' का संपादन भी किया है। आप नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के मार्गदर्शक मंडल में है । आप साहित्यिक संस्था विचार प्रवाह साहित्य मंच के उपाध्यक्ष है ।

आपकी प्रकाशित कृतियों में आलेख संग्रह 'चिंतन एक दर्शन', एवं लघुकथा संग्रह 'शुभ मुहूर्त' प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त सात साझा लघुकथा संकलनों एवं दो साझा व्यंग्य संग्रह में भी उनकी रचनाएँ प्रकाशित हैं। कोरोनाकाल में आपने भोपाल से प्रकाशित लोकप्रिय सुबह सवेरे समाचार पत्र में तीन वर्षों तक एक सौ इक्यावन कड़ियाँ चिंतन स्तंभ के तहत लिखी ।

साहित्य एवं हिंदी भाषा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए आपको अनेक प्रतिष्ठित सम्मानों से अलंकृत किया जा चुका है। वर्ष 2016 में नई शिक्षा नीति पर आमंत्रित सुझावों में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त डॉ. एस. एन. तिवारी स्मृति सम्मान, हिंदीभाषा.कॉम सम्मान, कथा दर्पण श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान, हिंदी साहित्य सम्मेलन बदनावर का उत्कृष्ट रचनाधर्मी सम्मान, लघुकथा शोध केन्द्र भोपाल कृति सम्मान, राष्ट्रीय अटल गौरव सम्मान, क्षितिज लघुकथा रत्न सम्मान तथा कलामोहन लघु कथा सम्मान सहित अनेक सम्मान उन्हें प्राप्त हो चुके हैं।

साहित्य अकादमी द्वारा 'शुभ मुहूर्त' के चयन की घोषणा के बाद इंदौर एवं धार क्षेत्र के साहित्यकारों और साहित्य-प्रेमियों में हर्ष का वातावरण है। विभिन्न साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं ने इसे हिंदी लघुकथा के लिए गौरवपूर्ण उपलब्धि बताते हुए देवेन्द्र सिंह सिसौदिया को बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित की हैं। यह सम्मान उनकी दीर्घकालीन साहित्य-साधना, सामाजिक सरोकारों से जुड़े लेखन और हिंदी लघुकथा के प्रति उनके समर्पण का महत्वपूर्ण राष्ट्रीय स्तर पर मिला सम्मान माना जा रहा है।

रेल लाओ महासमिति के अध्यक्ष, समाजसेवी पवन जैन गंगवाल 'धार रत्न' उपाधि से सम्मानित

धार। नगर के प्रतिष्ठित समाजसेवी एवं रेल लाओ महासमिति के अध्यक्ष पवन जैन गंगवाल को सामाजिक, धार्मिक एवं जनहित के क्षेत्र में किए गए उल्लेखनीय कार्यों के लिए रोटरी क्लब धार द्वारा पिछले दिनों आयोजित सम्मान समारोह में 'धार रत्न' उपाधि से सम्मानित किया गया। यह सम्मान रोटरी इंटरनेशनल डिस्ट्रिक्ट 3040 के गवर्नर सुशील मेहरोत्रा द्वारा प्रदान किया गया। पवन जैन गंगवाल को धार जिले में रेल सुविधा के लिए सतत प्रयास, राष्ट्रीय पर्वों पर झंडा वंदन एवं जनजागरण कार्यक्रमों का सफल आयोजन, तीन प्राचीन मंदिरों के जीर्णोद्धार तथा विभिन्न मानव कल्याणकारी गतिविधियों में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए यह सम्मान प्रदान किया गया। इस गौरवपूर्ण उपलब्धि पर आनंद चौपाटी परिवार द्वारा भी श्री गंगवाल का नागरिक अभिनंदन किया गया। इसके अतिरिक्त धार व्यापारी संघ, रेल लाओ महासमिति एवं विभिन्न सामाजिक, धार्मिक तथा व्यापारिक संगठनों के पदाधिकारियों ने उन्हें बधाई दी । श्री गंगवाल ने इस सम्मान का श्रेय सहयोगियों, सामाजिक संगठनों एवं नगरवासियों को देते हुए कहा कि वे भविष्य में भी समाज एवं नगरहित के कार्यों के लिए निरंतर समर्पित रहेंगे। जानकारी सेमी होलसेल व्यापारी महासंघ के मीडिया प्रभारी गौरव जैन द्वारा प्रदान की गई।

'अनुभूति' में सजी अज़हर हाशमी के गीतों की सुरमयी संध्या

उज्जैन। भारत भारती, उज्जैन द्वारा अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त कवि, गीतकार एवं सर्वधर्म समभाव के प्रखर प्रवक्ता स्वर्गीय अज़हर हाशमी की स्मृति को समर्पित संगीतमय कार्यक्रम अनुभूति का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में रतलाम के प्रसिद्ध कलाकारों द्वारा हाशमी जी के चयनित गीतों को संगीतबद्ध कर प्रस्तुत किया गया, जिसने श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया।

कार्यक्रम का उद्देश्य केवल गीतों की प्रस्तुति नहीं, बल्कि अज़हर हाशमी के मानवीय मूल्यों, राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समरसता और आध्यात्मिक चेतना से ओतप्रोत चिंतन को जन-जन तक पहुँचाना रहा। कलाकारों ने उनके गीतों को सुर और भाव के साथ प्रस्तुत कर ऐसा वातावरण निर्मित किया कि उपस्थित श्रोता देर तक उनकी रचनात्मक ऊर्जा में डूबे रहे।वक्ताओं ने कहा कि अज़हर हाशमी का साहित्य किसी एक वर्ग, धर्म या विचारधारा तक सीमित नहीं है, बल्कि वह सम्पूर्ण मानवता के लिए प्रेम, सद्भाव और भाईचारे का संदेश देता है। उनके गीत आज भी समाज को जोड़ने और सकारात्मक दिशा प्रदान करने की क्षमता रखते हैं।

ये विचार भारत भारती द्वारा कालिदास अकादमी में 'अनुभूति' के आयोजन में आमंत्रित अतिथियों ने अपने उद्बोधन में व्यक्त किये। आयोजन के मुख्यअतिथि कालिदास अकादमी के निदेशक डॉ. गोविन्द गंधे, सारस्वत अतिथि प्रो. हरिमोहन बुधौलिया, अध्यक्ष डॉ. शिव चौरसिया एवं विशिष्ट अतिथि, प्रो. गोपाल शर्मा, डॉ. श्रीकृष्ण जोशी, भारत भारती की प्रदेश संयोजक डॉ. प्रवीणा दवेसर, प्रेमचंद सृजन पीठ के निदेशक मुकेश जोशी थे।

रतलाम से पधारे ख्यात गायक कलाकारों डॉ. स्नेहा पंडित, किरण छाबड़ा, संगीता जैन, डॉ. प्राची पुरोहित, रूचि चौहान, अक्षद पंडित, तल्हीन त्रिवेदी, रोहित परिहार, रुद्राक्ष दवेसर ने अजहर हाशमी जी के प्रसिद्ध गीत मन को इस तरह नहीं उदास कर हिमगिरि जिसकी प्रहरी, देश के गणतंत्र का निशान तिरंगा, कान्हा की जब मुरली बोली, कोई कन्दरा में हो,दुनिया से तो बहुत मिला तू जैसे गीतों की विभिन्न रागों में संगीतमयी प्रस्तुति से खूब तालियाँ पाईं। सांगीतिक प्रस्तुति का संचालन डॉ. प्रवीणा दवेसर ने किया। वन्दे मातरम गीत की प्रस्तुति डॉ. अनामिका सोनी ने दी। अतिथि स्वागत भारत भारती के अध्यक्ष डॉ. हरीशकुमार सिंह, शशांक दुबे, शैलेश लेले, नंदिनी सक्सेना, संगीता पाटकर, सुभाष पाठक,संगीता तल्हेरा,डॉ. अभिलाषा शर्मा आदि ने किया। आयोजन में अदिति दवेसर, शरद शर्मा, डॉ. माया बदेका, डॉ. प्रतिभा शर्मा, चंद्रकांत नामजोशी, सुगनचंद जैन, डॉ. रमेश चांगेसिया प्रभात, अमित मिश्रा, संदीप सृजन, सीमा देवेन्द्र, शारदा श्री, डॉ. राजेश रावल, रमेश कश्यप, एस पी झा, पी के शुक्ल, आर सी शर्मा, अनिल कुरेल, रतनलाल रायकवार, प्रशांत सोहले, योगेश यादव,प्रकाश बांगर, मोहन सिंह हिंगोले, कुलदीप सिंह क्षत्रिय, सुरेन्द्र सर्किट, अनिल पांचाल सेवक,दिलीप जैन, अजय मेहता,दीपक सोनी, सौरभ शर्मा आदि सहित बड़ी संख्या में सुधिजन उपस्थित रहे। संचालन भारत भारती की सचिव डॉ. पांखुरी वक्त ने और आभार डॉ. हरीशकुमार सिंह ने व्यक्त किया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन 21 जून को नरसिंह मंदिर प्रांगण में होगा

नरसिंहपुर। 12 वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को जिला मुख्यालय नरसिंहपुर में नरसिंह मंदिर प्रांगण में आयोजित किया जाएगा। कलेक्टर श्रीमती रजनी सिंह ने आयोजित कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए विभागीय अधिकारियों को नियुक्त किया है। कार्यक्रम स्थल पर दरी, गद्दे, चादर, सौफा एवं सम्पूर्ण व्यवस्था के लिए मुख्य नगर पालिका अधिकारी नरसिंहपुर, मंच संचालन व्यवस्था, अतिथि स्वागत एवं कार्यक्रम स्थल पर कक्षा 6 वीं से 12 वीं तक के विद्यार्थियों की उपस्थिति के लिए जिला शिक्षा अधिकारी, महाविद्यालयीन छात्र-छात्राओं के उपस्थिति एवं योग के प्रचार- प्रसार के लिए चित्रकला, वाद-विवाद, निबंध प्रतियोगिता के लिए प्राचार्य उच्च शिक्षा, कार्यक्रम के प्रसारण एवं एलईडी की व्यवस्था के लिए खनिज अधिकारी, अतिथियों के लिए स्वलपाहार एवं विद्यार्थियों के लिए चाय व बिस्किट के लिए जिला आबकारी अधिकारी, कार्यक्रम स्थल पर पेयजल की व्यवस्था के लिए कार्यपालन यंत्री पीएचई, माइक व साउंड की व्यवस्था के लिए जिला संयोजक आदिम जाति कल्याण और आमंत्रण, फ्लैक्स, अतिथि स्वागत एवं पौधरोपण की व्यवस्था के लिए आयुष विभाग को दायित्व सौंपे हैं।

सांदीपनि विद्यालय में विद्यार्थियों को वृक्षारोपण, पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित किया एसडीएम ने

सोहागपुर । आज स्थानीय सांदीपनि विद्यालय में सीड बॉल निर्माण कार्यक्रम का आयोजन अनुविभागीय अधिकारी प्रियंका भल्लावी के आतिथ्य में किया गया। इस अवसर पर अनुविभागीय अधिकारी प्रियंका भल्लावी के मार्गदर्शन में विद्यालय के समस्त स्टॉफ एवं विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता कर सीड बॉल का निर्माण किया। इसी अवसर पर एसडीएम सुश्री प्रियंका भल्लावी ने विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण एवं वृक्षारोपण के महत्व के संबंध में जानकारी प्रदान करते अधिक से अधिक पौधारोपण एवं संरक्षण हेतु प्रेरित किया। आपने आगे कहा कि पौधारोपण करके उनकी देखभाल करें। यही वृक्ष आने वाले समय में हमें ऑक्सीजन देंगे। जिससे हमें प्राण वायु मिलती है। हर व्यक्ति का कर्तव्य है की जीवन में कई पौधारोपण करके उनकी देखभाल अवश्य करें। इस अवसर पर बीआरसी राकेश रघुवंशी, सांदीपनि विद्यालय प्राचार्य रामकिशोर दुबे सहित विद्यालय का समस्त स्टॉफ उपस्थित रहा। उल्लेखनीय है कि उक्त कार्यक्रम का उद्देश्य वर्षा ऋतु के दौरान बीजों के प्रसार के माध्यम से हरित आवरण बढ़ाना एवं विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता विकसित करना था।

कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन संपन्न हुआ तथा विद्यार्थियों ने पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की।

शिविरों के माध्यम से 268 नागरिकों के आधार अपडेट व नए कार्ड बनाए गए

नरसिंहपुर। सहायक प्रबंधक ई-गवर्नेंस श्री ब्रजकिशोर बादल ने बताया कि कलेक्टर श्रीमती रजनी सिंह के निर्देशन में ग्राम पंचायत स्तर पर विशेष आधार शिविरों का आयोजन कर नागरिकों को उनके गांव के समीप ही आधार अपडेट एवं नवीन आधार कार्ड बनाने की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। इसी क्रम में गुरूवार को जिले के विभिन्न ग्राम पंचायतों में 7 आधार संबंधी शिविर लगाए गए। इन शिविरों के माध्यम से कुल 268 नागरिकों के आधार अपडेट किए गए एवं नए आधार कार्ड बनाए गए। उन्होंने बताया कि 121 नागरिकों के आधार में बायोमेट्रिक अपडेट, 58 नागरिकों के डेमोग्राफिक अपडेट और 90 नागरिकों के नए आधार कार्ड बनाए गए। साथ ही इन शिविरों के माध्यम से 5 वर्ष से और 15 वर्ष से एक मेंडेटरी आधार अपडेशन का कार्य किया गया।

14 जून को ऑनलाइन योग सत्र आयोजित किया जाएगा

नरसिंहपुर। आयुष अधिकारी नरसिंहपुर ने बताया कि अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2026 के उपलक्ष्य में आयुष मंत्रालय द्वारा 14 जून को ऑनलाइन योग सत्र आयोजित किया जाएगा। यह कार्यक्रम सहयोग से गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने के उद्देश्य से आयोजित किया जा रहा है। प्रतिभागियों की अधिकतम संख्या सुनिश्चित करने के लिए देशभर के नागरिकों से सक्रिय भागीदारी की अपील की गई है। कार्यक्रम में शामिल होने के लिए प्रतिभागियों को टोल-फ्री नंबर 1800-315-7008 पर मिस्ड कॉल देकर पंजीयन कराना होगा। पंजीयन के बाद उन्हें व्हाट्सएप के माध्यम से ऑनलाइन सत्र की लिंक भेजी जाएगी। स्वस्थ्य भारत के निर्माण के लिए सभी नागरिकों से रविवार 14 जून 2026 को प्रात: 6.15 बजे से 7.35 बजे तक होने वाले इस कार्यक्रम में प्राप्त लिंक से कार्यक्रम में जुड़कर योगाभ्यास का लाभ लेने की अपील की है।

पशुपालकों को गोरस एप से चारा खरीदने और बेचने की सुविधा मिलेगी

नरसिंहपुर। उप संचालक पशु चिकित्सा सेवाएं डॉ. सुनील कुमार बृजपुरिया ने बताया कि नरसिंहपुर जिले में पशुपालन व्यवसाय को अधिक संगठित, लाभकारी और तकनीक आधारित बनाने के उद्देश्य से पशुपालन एवं डेयरी विभाग ने गोरस एप विकसित किया है। यह एप एक ऐसा डिजिटल प्लेटफॉर्म है, जहां जिले के पशुपालक घर बैठे साइलेज, भूसा और अन्य पशु आहार की आसानी से खरीदी व बिक्री कर सकेंगे। विभाग के कर्मचारी जिले के किसानों और पशु पालकों को इस एप के प्रति जागरूक कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि गोरस एप के जरिए नरसिंहपुर जिले के पशुपालक सीधे विक्रेताओं से संपर्क कर चारा खरीद सकेंगे। इससे बिचौलियों की भूमिका खत्म होगी, पारदर्शिता बढ़ेगी और समय व पैसो की बचत होगी। जिन किसानों के पास पर्याप्त कृषि भूमि है और वे बड़ी मात्रा में हरा चारा या साइलेज (पोषक और लंबे समय तक सुरक्षित रखा जा सकने वाला आहार) उगाते हैं, वे इस एप पर पंजीयन कर डिस्ट्रीब्यूटर बन सकते हैं। इससे उन्हें अतिरिक्त आय प्राप्त होगी। उप संचालक डॉ. सुनील बृजपुरिया ने बताया कि एप में पशु की जानकारी (नस्ल, वजन, वर्तमान दुग्ध उत्पादन, गर्भावस्था और उपलब्ध चारा) दर्ज करने पर, यह वैज्ञानिक गणना कर पशु के लिए संतुलित आहार की मात्रा और समय की जानकारी देता है।

मानवता की अनूठी मिसाल- काया इंटरनेशनल योग स्टूडियो के मातृशक्ति रक्तदान शिविर में गूंजा सृष्टि की जननी

नरसिंहपुर। सामाजिक सरोकारों की दिशा में आगे बढ़ते हुए काया इंटरनेशनल योग स्टूडियो की प्रमुख सुश्री इंदु सिंह के नेतृत्व में भव्य आयोजन हुआ।रक्तदान से पूर्व सभी महिलाओं का निःशुल्क हीमोग्लोबिन एवं ब्लड प्रेशर परीक्षण; पूर्ण सुरक्षा मानकों के साथ उत्सव संपन्न हुआ।शासकीय जिला चिकित्सालय की सर्व-सुविधायुक्त बीटीसी वैन और विशेषज्ञ स्टाफ की तकनीकी भूमिका से शिविर को नई गति मिली।विश्व रक्तदाता दिवस के वैश्विक आह्वान के अंतर्गत नरसिंहपुर नगर में एक अभूतपूर्व और सामाजिक चेतना से ओतप्रोत मानवीय अभियान संपन्न हुआ। क्षेत्र की प्रतिष्ठित संस्था काया इंटरनेशनल योग स्टूडियो एवं काया जनकल्याण समिति के संयुक्त तत्वावधान में मातृशक्ति रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। संस्था की संचालिका एवं सुप्रसिद्ध वेलनेस एक्सपर्ट सुश्री इंदु सिंह के कुशल संयोजन एवं नेतृत्व में आयोजित इस शिविर का मुख्य उद्देश्य समाज में महिलाओं के स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाना और रक्तदान के क्षेत्र में मातृशक्ति की सहभागिता को अग्रिम पंक्ति में लाना रहा। इस अवसर पर मातृशक्ति ने समाज के समक्ष मानवता, सेवा और परोपकार का प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत करते हुए रक्तदान कर जरूरतमंदों को नया जीवन देने का संदेश दिया। अक्सर, सामाजिक स्तर पर महिलाओं के स्वास्थ्य और रक्तदान को लेकर कई तरह के भ्रम या संकोच देखे जाते हैं। इन भ्रांतियों को दूर करते हुए शिविर की शुरुआत पूरी तरह से वैज्ञानिक और चिकित्सकीय पद्धतियों के साथ की गई। सर्वप्रथम शिविर स्थल पर उपस्थित समस्त माताओं-बहनों और सदस्यों का गहन रक्त परीक्षण किया गया। रक्तदान से पूर्व चिकित्सकीय मानकों के अनुरूप सभी प्रतिभागियों के हीमोग्लोबिन एवं ब्लड प्रेशर की निःशुल्क जांच की गई, ताकि केवल पात्र एवं स्वस्थ महिलाएं ही रक्तदान कर सकें। स्वास्थ्य परीक्षण उपरांत पात्र चिकित्सा मानकों के अनुसार पूर्णतः स्वस्थ और पात्र पाई गई महिलाओं को ही रक्तदान की अनुमति दी गई, जिससे शिविर में सुरक्षा का माहौल और सुदृढ़ हुआ। महिलाओं में इंटरनेशनल योग मास्टर इंदु सिंह, भारती रघुवंशी, आरती सिंह, मीना दुबे, चंचल श्रीवास्तव, पूनम धुर्वे, उर्वशी पाठक एवं दीपांशी लखेरा ने उत्साहपूर्वक एक-एक यूनिट रक्तदान कर समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन किया। इन महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिया कि मातृशक्ति केवल सृष्टि की जननी ही नहीं, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर जीवनदाता की भूमिका भी निभा सकती है। इस पूरे आयोजन के दौरान नगर की कई गणमान्य महिलाओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं की उपस्थिति अत्यंत प्रेरणादायी रही। जिनमें ज्योति चौहान, ज्योति नेमा, विनीता पाण्डेय, सरिता जाट, वंदना तंतुवाय, सीमा नामदेव एवं कीर्ति प्रजापति आदि प्रमुख हैं। उन्होंने रक्तदाताओं का उत्साहवर्धन करते हुए इस पुनीत कार्य में सहयोग प्रदान किया और अन्य महिलाओं को भी रक्तदान के लिए प्रेरित किया। मातृशक्ति रक्तदान शिविर को सफल बनाने में शासकीय जिला चिकित्सालय की महत्वपूर्ण भूमिका रही। चिकित्सालय प्रशासन द्वारा विशेष रूप से रक्तदान हेतु सर्वसुविधायुक्त बीटीसी (ब्लड ट्रांसफ्यूजन सेंटर) वैन उपलब्ध कराई साथ ही, चिकित्सालय के अनुभवी और प्रशिक्षित तकनीकी स्टाफ ने अपनी सेवाएं दीं। इस दौरान डॉ. मध्यांतिका गर्ग, लैब टेक्नीशियन स्वप्निल चौरसिया, वार्ड बॉय अभिषेक, वैन ड्राईवर शाहरुख़ खान एवं अन्य सहयोगी स्टाफ उपस्थित रहे, जिन्होंने पूरी प्रक्रिया को सुरक्षित एवं व्यवस्थित ढंग से सम्पन्न कराया व अत्यंत संवेदनशीलता और कुशलता के साथ रक्त संग्रहण का कार्य संपन्न कराया। उन्होंने कहा कि, इन सभी रक्तदाताओं द्वारा दान की गई रक्त की एक-एक बूँद जिला चिकित्सालय के ब्लड बैंक के माध्यम से गंभीर मरीजों, प्रसूताओं और जरूरतमंदों के लिए जीवनदायिनी साबित होगी। कार्यक्रम के अंत में काया इंटरनेशनल योग स्टूडियो की संचालिका सुश्री इंदु सिंह ने सभी रक्तदाताओं, अतिथियों, जिला चिकित्सालय के चिकित्सकीय दल एवं सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि रक्तदान महादान है और प्रत्येक स्वस्थ व्यक्ति को समय-समय पर रक्तदान कर मानव सेवा के इस महान कार्य में सहभागी बनना चाहिए। उन्होंने कहा कि महिलाओं की सहभागिता से समाज में सकारात्मक परिवर्तन की नई शुरुआत होती है। मातृशक्ति का यह प्रयास न केवल अनेक लोगों के जीवन की रक्षा करेगा।

महाकाल दर्शन अब 100 रुपए महंगा

लेजर शो फ्री नहीं देख पाएंगे श्रद्धालु, आरती और शीघ्र दर्शन का भी देना होता है शुल्क

उज्जैन (नप्र)। बाबा महाकाल के दर्शन के लिए उज्जैन आने वाले श्रद्धालुओं की जेब पर और बोझ बढ़ने वाला है। महाकाल मंदिर परिसर में चलने वाले प्रसिद्ध लाइट एंड साउंड शो को देखने के लिए अब श्रद्धालुओं को 100 रुपए प्रति व्यक्ति का शुल्क देना होगा। मंदिर प्रबंध समिति ने इस नई व्यवस्था को तत्काल प्रभाव से लागू कर दिया है।गौरतलब है कि करीब 7 महीने तक मुफ्त संचालन के बाद अब इस शो को पेड किया गया है।लाइट एंड साउंड शो की शुरुआत 25 अक्टूबर 2025 को सीएम मोहन यादव ने की थी।

18 करोड़ की लागत से तैयार हुआ है शो–इस शो का लोकार्पण मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने 25 अक्टूबर 2025 को दीपावली के अवसर पर किया था। स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट के तहत मध्य प्रदेश पर्यटन विकास निगम ने इसे करीब 18 करोड़ 7 लाख रुपए की लागत से तैयार किया है।

करीब 25 मिनट के इस शो में वॉटर स्क्रीन, फाउंटेन, लेजर लाइट और बेहतरीन साउंड इफेक्ट्स के जरिए भगवान महाकाल, मां क्षिप्रा और प्राचीन अवंतिका नगरी (उज्जैन) की गौरव गाथा दिखाई जाती है।

शुल्क लगाने के पीछे मंदिर समिति का तर्क – मंदिर प्रशासन का कहना है कि इस भव्य शो के संचालन और रखरखाव पर हर महीने करीब 1.5 लाख रुपए का खर्च आ रहा है। मंदिर के प्रशासक प्रथम कौशिक के अनुसार, इसी खर्च को पूरा करने और व्यवस्थाओं को बेहतर बनाए रखने के लिए 100 रुपए का एंट्री शुल्क रखने का फैसला लिया गया है।

हर माह 15 लाख रुपए कमाई का अनुमान – कमाई के लिहाज से देखें तो मंदिर समिति को इस फैसले से अच्छी आय होने की संभावना है। मंदिर प्रशासन के अनुसार, रोजाना करीब 500 श्रद्धालु लाइट एंड साउंड शो देखने पहुंच रहे हैं। यदि प्रत्येक श्रद्धालु से 100 रुपए शुल्क लिया जाता है तो समिति को प्रतिदिन लगभग 50 हजार रुपए की आय होगी। इस हिसाब से एक महीने में करीब 15 लाख और सालभर में लगभग 1.8 करोड़ रुपए का राजस्व मिल सकता है, जबकि शो के संचालन और रखरखाव पर हर महीने करीब डेढ़ लाख रुपए खर्च होने की जानकारी सामने आई है। ऐसे में यह व्यवस्था मंदिर समिति के लिए आय का एक नया स्रोत भी बन सकती है।

पशुओं को बरसात के मौसम में बीमारियों से बचाव के लिए टीकाकरण जरूरी

नरसिंहपुर। उप संचालक पशु चिकित्सा सेवाएं डॉ. सुनील बृजपुरिया ने बताया कि बरसात के मौसम में पशुओं को बीमारियों से बचाव के लिए टीकाकरण कराना जरूरी है। उन्होंने बताया कि पशुपालन विभाग के चिकित्सा विशेषज्ञों के अनुसार बारिश के सीजन में गलघोटू, लंगड़ा बुखार और खुरपका-मुंहपका जैसी जानलेवा बीमारियां पशुओं में तेजी से फैलती हैं, जिससे पशुओं की मृत्यु तक हो सकती है। इन बीमारियों का सीधा असर पशुओं के दुग्ध उत्पादन और उनकी कार्यक्षमता पर पड़ता है। उपसंचालक डॉ. बृजपुरिया ने बताया कि गलघोटू बीमारी में पशु को तेज बुखार, सांस लेने में तकलीफ और गले में सूजन हो जाती है। वहीं लंगड़ा बुखार के कारण पैरों में सूजन, तेज बुखार और चलने-फिरने में गंभीर परेशानी होती है। खुरपका-मुंहपका रोग पशुओं की उत्पादन क्षमता को सीधा प्रभावित करता है, जबकि लंपी स्किन डिजीज के कारण शरीर पर गांठें बन जाती हैं और पशु लंबे समय तक बीमार रहता है। उन्होंने बताया कि अपने पशुओं को समय रहते टीका लगवाना ही इन बीमारियों से बचाव का सबसे प्रभावी उपाय है। विशेषज्ञों के अनुसार हर वर्ष बारिश शुरू होते ही संक्रामक रोगों का खतरा कई गुना बढ़ जाता है। इसके बावजूद अनेक पशुपालक टीकाकरण को लेकर लापरवाही बरतते हैं, जिसका खामियाजा बाद में पूरे पशुधन को भुगतना पड़ता है। वर्तमान में जिले में गलघोटू और लंगड़ा बीमारी से बचाव के लिए सघन टीकाकरण अभियान चलाया जा रहा है। खुरपका व मुंहपका- एफएमडी बीमारी से बचाव के लिए वर्तमान में जिले में विशेष टीकाकरण किया जा रहा है।

मैं वापस आऊंगा

मोहब्बत से बड़ी कोई मंज़िल नहीं

कुछ प्रेम कहानियाँ पूरी होकर याद नहीं रहतीं, बल्कि अधूरी रहकर अमर हो जाती हैं। इतिहास के पन्नों में दर्ज बंटवारे की त्रासदी ने लाखों लोगों से उनके घर, रिश्ते और सपने छीन लिए थे। इम्तियाज अली की नई फिल्म 'मैं वापस आऊंगा' उसी दर्दनाक इतिहास की पृष्ठभूमि पर बुनी गई एक ऐसी प्रेम कहानी है, जिसमें इंतजार सात दशक से भी लंबा है और एक वादा पूरी फिल्म की धड़कन बन जाता है।

प्रेम, बिछड़न, स्मृतियों और सरहदों के आर-पार फैली यह कहानी इम्तियाज अली की उन फिल्मों की याद दिलाती है, जिनमें प्यार सिर्फ भावना नहीं बल्कि जीवन का दर्शन बन जाता है। 95 वर्षीय इशर सिंह ग्रेवाल उर्फ कीनू (नसीरुद्दीन शाह) अपनी जिंदगी की आखिरी दहलीज पर खड़े हैं। उम्र ने शरीर को कमजोर कर दिया है और डिमेंशिया ने यादों को धुंधला, लेकिन एक नाम अब भी उनकी स्मृति में उतना ही ताजा है अफसाना उर्फ जिया। पाकिस्तान के सरगोधा में छूट गया वह प्यार, जिसे वह 78 वर्षों से अपने भीतर संजोए हुए हैं।

फिल्म अतीत और वर्तमान के बीच लगातार यात्रा करती है। युवा कीनू (वेदांग रैना) और जिया (शर्वरी वाघ) की प्रेम कहानी आजादी से पहले के पंजाब में खिलती है। दोनों की दुनिया छोटी है, लेकिन सपने बड़े हैं। जिया को हमेशा यह डर सताता है कि हालात बिगड़े तो कीनू उसे छोड़कर चला जाएगा। कीनू हर बार उसे भरोसा देता है, लेकिन इतिहास प्रेमियों के वादों से ज्यादा ताकतवर साबित होता है। बंटवारा दोनों को ऐसी सरहद के दो किनारों पर खड़ा कर देता है, जहां से लौटना आसान नहीं। वर्तमान में कीनू की अंतिम इच्छा केवल एक है जिया से आखिरी बार मिलना। इस अधूरे प्रेम को मुकम्मल करने की जिम्मेदारी उठाता है उसका पोता निर्वैर उर्फ निवि (दिलजीत दोसांझ)। इसके बाद फिल्म केवल एक प्रेम कथा नहीं रह जाती, बल्कि स्मृतियों, पछतावों और मानवीय रिश्तों की भावनात्मक यात्रा बन जाती है।

फिल्म की सबसे बड़ी ताकत इसका भावनात्मक संसार है। हालांकि शुरुआत में

वाले लोगों का दर्द इसमें दिखाई देने लगता है। यह वह बिंदु है जहां फिल्म निजी प्रेम से निकलकर सार्वभौमिक संवेदना तक पहुंचती है।

नसीरुद्दीन शाह इस फिल्म की आत्मा हैं। उनकी अदाकारी इतनी सहज और प्रभावशाली है कि कई दृश्य अभिनय से अधिक जीवन के अंश प्रतीत होते हैं। उनकी आंखों में तैरती स्मृतियां, चेहरे पर जमी प्रतीक्षा और आवाज में छिपी थकान मिलकर ऐसा चरित्र रचती हैं जो लंबे समय तक

कहानी अपेक्षाकृत धीमी गति से आगे बढ़ती है। पहले हिस्से में जिया और कीनू के प्रेम प्रसंगों को थोड़ा अधिक विस्तार दिया गया है, जिससे कई दृश्य दोहराव का अहसास कराते हैं। अतीत और वर्तमान के बीच लगातार आवाजाही भी कुछ दर्शकों को उलझा सकती है। यही वजह है कि फिल्म का शुरुआती हिस्सा धैर्य मांगता है। लेकिन, इंटरवल के बाद कहानी जिस तरह भावनात्मक ऊंचाई हासिल करती है, वहीं इम्तियाज अली अपनी पहचान दर्ज कराते हैं। दूसरे हिस्से में फिल्म केवल दो प्रेमियों की कहानी नहीं रहती, बल्कि विस्थापन की वैश्विक त्रासदी का प्रतीक बन जाती है। दुनिया के किसी भी कोने में युद्ध और हिंसा के कारण बिछड़ने दर्शक के साथ रहता है। यह प्रदर्शन वास्तव में अभिनय की पाठशाला जैसा है। दिलजीत दोसांझ ने निर्वैर ग्रेवाल के किरदार में सादगी और आत्मीयता का रंग भरा है। वह कहानी के भावनात्मक पुल बनकर उभरते हैं। वहीं वेदांग रैना युवा कीनू के रूप में प्रभावशाली साबित होते हैं। प्रेम, उत्साह और बिछड़न के बीच झूलते उनके किरदार में पर्याप्त गहराई दिखाई देती है।

शर्वरी वाघ फिल्म की सबसे खूबसूरत उपस्थिति हैं। जिया के किरदार में उनकी मासूमियत और भावनात्मक ईमानदारी दर्शकों को प्रभावित करती है। वह केवल एक प्रेमिका नहीं बल्कि उस पीढ़ी का चेहरा बन जाती हैं, जिसने इतिहास की कीमत अपने निजी सुखों से चुकाई थी। सहायक कलाकारों में डॉली अहलूवालिया एक छोटे लेकिन अत्यंत मार्मिक दृश्य में याद रह जाती हैं। रजत बेदी, बनीता संधू, मनीष चौधरी, रजित कपूर और अंजना सुखानी अपने-अपने हिस्से की भूमिकाओं को विश्वसनीयता प्रदान करते हैं।

तकनीकी पक्षों की बात करें तो सिनेमैटोग्राफर सिलवेस्टर फोंसेका का कैमरा फिल्म का बड़ा सहायक बनता है। वह विभाजन-पूर्व पंजाब की खूबसूरती और उसके बाद के दर्द को समान संवेदनशीलता से कैद करते हैं। कई दृश्य किसी पुराने फोटो एलबम के पन्नों की तरह लगते हैं, जिनमें समय ठहर गया हो। फिल्म की एडिटिंग कुछ जगह और कसाव मांगती है। विशेष रूप से पहले हिस्से में गति थोड़ी बेहतर हो सकती थी। ए.आर. रहमान का संगीत अपेक्षाओं के अनुरूप पूरी तरह नहीं खिलता, हालांकि 'मसकारा' और 'क्या कमाल है' जैसे गीत कहानी के भावनात्मक ताने-बाने में अच्छी तरह घुलते हैं।

कुल मिलाकर 'मैं वापस आऊंगा' कोई तेज रफ्तार मनोरंजन नहीं है। यह एक धीमी लेकिन गहरी भावनात्मक यात्रा है, जो प्रेम को केवल मिलन नहीं बल्कि प्रतीक्षा, स्मृति और समर्पण के रूप में देखती है। फिल्म का संदेश बेहद सरल है सरहदें देशों को बांट सकती हैं, लेकिन सच्ची मोहब्बत को नहीं। इम्तियाज अली ने इस बार प्रेम को इतिहास के जख्मों से जोड़कर देखा है और यही इस फिल्म की सबसे बड़ी उपलब्धि है। यह फिल्म खत्म होने के बाद भी दर्शक के मन में देर तक बनी रहती है, ठीक वैसे ही जैसे कोई अधूरी प्रेम कहानी, जो कभी पूरी तरह खत्म नहीं होती।

रियल बॉक्स

दर्शकों की पहली पसंद जासूसी के कथानक

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

भारतीय जनमानस और सिनेमा का संबंध हमेशा से ही कौतूहल और साहस की कहानियों से गहरा रहा है। मनोरंजन के विस्तृत फलक पर जब जासूसी और राष्ट्र प्रेम का मेल होता है, तो वह केवल एक फिल्म नहीं रह जाती, बल्कि एक सामूहिक राष्ट्रीय भावना का प्रतिनिधित्व करने लगती है। हिंदी सिनेमा के शैशव काल से लेकर आज की अत्याधुनिक तकनीक से लैस 'धुरंधर' जैसी फिल्मों तक, जासूसी का कथानक एक लंबी और रोचक यात्रा तय कर चुका है। यह विधा केवल अंधेरी गलियों और रहस्यमयी संकेतों तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसने बदलते दौर के साथ अपनी परिभाषा को विस्तार दिया है। ब्लैक एंड व्हाइट सिनेमा के दौर में जहां जासूसी का स्वरूप व्यक्तिगत रहस्यों और छिटपुट अपराधों को सुलझाने तक केंद्रित था, वहीं आधुनिक युग में यह भू-राजनीतिक संघर्षों, सीमा पार के तनावों और तकनीक आधारित युद्ध कौशल का मुख्य केंद्र बन गई है। दर्शकों के दिलों में इन जासूसी कहानियों के प्रति जो अटूट आकर्षण है, उसकी जड़ें हमारी संस्कृति में मौजूद अनिश्चितता के प्रति जिज्ञासा और नायक के प्रति अगाध विश्वास में निहित हैं।

जैसे-जैसे समय बदला और देश ने विभिन्न युद्धों और बाहरी चुनौतियों का सामना किया, सिनेमाई जासूस का चेहरा भी बदलने लगा। जासूसी का केंद्र अब व्यक्तिगत अपराधों से हटकर राष्ट्र की सुरक्षा पर केंद्रित होने लगा। इस बदलाव ने जासूसी फिल्मों को एक नया मंच प्रदान किया, जहां पड़ोसी देशों, विशेषकर पाकिस्तान के साथ होने वाले तनावों को कहानियों का आधार बनाया गया। 'राजी' जैसी फिल्म इस विधा में एक मील का पत्थर साबित हुई, क्योंकि इसने जासूसी को केवल बंदूकों और धमाकों तक सीमित न रखकर एक जासूस के मानसिक द्वंद्व और उसके मानवीय बलिदानों को बहुत ही संजीदगी से पर्दे पर उतारा। 'राजी' में दिखाया गया कि एक जासूस के लिए देश के प्रति कर्तव्य और उसकी अपनी भावनाओं के बीच कितना गहरा संघर्ष होता है। यह फिल्म उस दौर की परिचायक है जहां जासूसी को एक गंभीर और जोखिम भरे पेशे के रूप में दिखाया गया, जिसमें ग्लैमर से ज्यादा त्याग की भावना सर्वोपरि थी।

हाल के वर्षों में 'धुरंधर' जैसी सुपरहिट फिल्मों की श्रृंखला ने जासूसी के इस विधा को एक व्यापक और व्यावसायिक रूप दिया है। इन फिल्मों में जासूसी का कैनवास बहुत बड़ा हो गया। अब नायक केवल देश के भीतर ही नहीं, बल्कि सात समुंदर पार जाकर भी दुश्मनों के मंसूबों को नाकाम करता है। इन आधुनिक फिल्मों में पाकिस्तान और वहां की खुफिया एजेंसियों के इर्द-गिर्द बुनी गई कहानियां दर्शकों को एक अलग तरह का रोमांच प्रदान करती हैं। दर्शकों का एक बड़ा वर्ग ऐसी फिल्मों को इसलिए पसंद करता है क्योंकि इनमें वीरता, चतुराई और अंततः सत्य की जीत जैसे तत्व होते हैं जो मनोरंजन के साथ-साथ एक प्रकार का संतोष भी प्रदान करते हैं। इसके पीछे का मनोवैज्ञानिक कारण यह भी है कि दर्शक अपने नायकों को उन चुनौतियों से लड़ते हुए देखना चाहते हैं, जिन्हें वे वास्तविक जीवन में एक खतरे के रूप में देखते हैं।

ब्लैक एंड व्हाइट फिल्मों के उस दौर की बात करें तो वहां जासूसी का एक अलग ही सौंदर्यबोध था। उस दौर में देव आनंद एक ऐसे व्यक्तित्व के रूप में उभरे जिन्होंने जासूसी और अपराध आधारित थ्रिलर फिल्मों को एक नई पहचान दी। देव आनंद के किरदारों में जो चपलता और हाजिरजवाबी थी, उसने जासूस को केवल एक सरकारी मुलाजिम की छवि से निकालकर एक शहरी नायक के रूप में स्थापित किया। देव आनंद ने हिंदी सिनेमा में कई यादगार जासूसी किरदार निभाए। उनकी प्रमुख जासूसी या जासूसी-टच वाली फिल्मों की सूचियों में पहली फिल्म सीआईडी (1956) थी, जिसमें वे एक पुलिस इंस्पेक्टर के रूप में मर्डर मिस्ट्री सुलझाते हैं। काला पानी (1958) जेल और अपराध के रहस्य से जुड़ी कहानी थी, जिसमें देव आनंद सच्चाई खोजते हैं। काला बाजार (1960)

में वे ब्लैक मार्केटिंग के खिलाफ पड़ताल करते हैं। 1961 में आई 'हम दोनों' पूरी तरह जासूसी फिल्म नहीं है, लेकिन इसमें पहचान और रहस्य का एंगल है। ज्वेल थीफ (1967) उनकी सबसे हिट स्पाई-थ्रिलर फिल्मों में से एक है। 'जॉनी मेरा नाम' (1970) में वे अंडरकवर एजेंट बनकर अपराधियों की गैंग में घुसते हैं। 1973 में आई 'हीरा पन्ना' चोरी, पीछा और रहस्य से भरी कहानी है। वारंट (1975) में वे अपराधियों का पीछा करते हैं। देव आनंद की जासूसी फिल्मों की खासियत उनका स्टाइल, तेज डायलॉग डिलीवरी और स्मार्ट अंडरकवर रोल था।

जासूसी फिल्मों के इतिहास में अगर सबसे अधिक सक्रिय अभिनेताओं और निर्देशकों की बात की जाए, तो देव आनंद के बाद इस मशाल को कई अन्य कलाकारों ने आगे बढ़ाया। आधुनिक दौर में सलमान खान, अक्षय कुमार और ऋतिक रोशन जैसे अभिनेताओं ने जासूसी के अलग-अलग अवतारों को जीवंत किया है। निर्देशकों के मामले में राज खोसला से लेकर आधुनिक समय में कबीर खान और सिद्धार्थ आनंद जैसे नामों ने इस शैली को नई ऊंचाइयां दी हैं। राज खोसला ने 60-70 के दशक में रहस्य और रोमांच का जो ढांचा तैयार किया था, उसी को आधुनिक निर्देशकों ने तकनीक और भव्यता के साथ आगे बढ़ाया है। विशेष रूप से पाकिस्तान की पृष्ठभूमि वाली फिल्मों के प्रति दर्शकों का आकर्षण इस तथ्य से भी जुड़ा है कि ये कहानियां हमारे वास्तविक इतिहास और वर्तमान की घटनाओं के बहुत करीब महसूस होती हैं।

जब एक भारतीय जासूस दुश्मन की मांद में घुसकर सूचनाएं निकालता है या किसी बड़े आतंकी हमले को रोकता है, तो वह सिनेमा के नायक से कहीं बढ़कर एक रक्षक की छवि ले लेता है। यही कारण है कि 'राजी' से लेकर 'धुरंधर' तक की फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। दर्शकों को इन फिल्मों में अपनी सुरक्षा और सामर्थ्य का प्रतिबिंब दिखाई देता है। जासूसी सिनेमा के विकास क्रम को देखते हुए यह स्पष्ट होता है कि यह विधा अब केवल मनोरंजन का साधन नहीं रह गई, बल्कि यह समय के साथ चल रहे बदलावों का आईना भी है। पहले जहां जासूसी के लिए केवल भेष बदलने और गुप्त संकेतों का सहारा लिया जाता था, अब वहां उपग्रह संचार और डिजिटल निगरानी जैसी तकनीकों का समावेश हो गया है। इसके बावजूद, कहानियों का मूल तत्व वही पुराना है। एक अकेला व्यक्ति जो अपनी बुद्धि और साहस के बल पर पूरी दुनिया को बचा सकता है। यह नायकत्व ही है जो दर्शकों को पीढ़ी दर पीढ़ी इन फिल्मों से जोड़े रखता है।

हिंदी सिनेमा में जासूसी और रहस्य-थ्रिलर पर आधारित फिल्मों की एक लंबी परंपरा रही है। शुरुआत क्लासिक क्राइम-थ्रिलर से हुई और आज यह हाई-टेक इंटरनेशनल स्पाई यूनिवर्स तक पहुंच चुकी है। 1950-70 के क्लासिक दौर में सीआईडी, ज्वेल थीफ और 'जॉनी मेरा नाम' रही। 1980-90 के दौर में धर्मेंद्र की 'आँखें' (1993), आमिर खान की 'बाजी' (1995) आई। 2000 के बाद मॉडर्न स्पाई थ्रिलर का दौर आया और ए वेडनेसडे (2008) आई, जिसमें आतंकवाद और इंटेलिजेंस का सस्पेंस रहा। 2015 की फिल्म 'बेबी' सीक्रेट एजेंसी के मिशन और आतंकवाद विरोधी ऑपरेशन के कथानक पर बनी। 2017 की 'नाम शबाना' एक महिला जासूस की बैक स्टोरी है। लेकिन, 2018 की आलिया कपूर की फिल्म 'राज़ी' यादगार फिल्म बनी। यह भारत-पाक युद्ध के दौरान एक अंडरकवर महिला भारतीय जासूस की सच्ची कहानी से प्रेरित है। 2019 में 'रोमियो अकबर वालटर' आई जो 1971 के युद्ध में जासूसी मिशन पर बनी।

इसके बाद के दौर में एक था टाइगर (2012), मद्रास कैफे (2013), टाइगर जिंदा है (2017), वार (2019) और 'पठान' (2023) ने इस परंपरा को जारी रखा। 2025 की फिल्म 'धुरंधर' और 2026 में आई सीक्वल 'धुरंधर 2' ने बॉक्स ऑफिस के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए। ये सभी फिल्में इंटरनेशनल लेवल की जासूसी, हाई-टेक गैजेट्स और बड़े एक्शन पर आधारित हैं। देखने में आया कि 60-70 के दशक में जासूसी फिल्मों में रहस्य और स्टाइल प्रमुख था। 2000 के बाद ये फिल्में रियलिस्टिक इंटेलिजेंस ऑपरेशन और ग्लोबल मिशन पर शिफ्ट हो गई। जबकि,जबकि, आज जासूसी फिल्में एक पूरा सिनेमैटिक यूनिवर्स बन चुकी हैं। भारतीय सिनेमा में जासूसी की कहानियां हमारे समाज के कौतूहल और साहस का प्रतिनिधित्व करती हैं। चाहे वह देव आनंद का जादुई दौर रहा हो या आज के जांबाजों का एक्शन से भरपूर सफर, जासूसी फिल्मों ने हमेशा यह साबित किया है कि रहस्य और रोमांच की कोई एक्सपायरी डेट नहीं होती।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

ऋतिक हॉलीवुड फिल्म में 'ग्रीक गॉड' करेंगे डेब्यू

ऋतिक रोशन इंटरनेशनल लेवल पर अपनी पहचान बनाने की दिशा में शायद अपना पहला बड़ा कदम उठा रहे हैं। बॉलीवुड स्टार ने हॉलीवुड की एक बड़ी मैनेजमेंट और प्रोडक्शन कंपनी के साथ करार किया है, जिससे यह अटकलें लगाई जा रही हैं कि क्या कोई ग्लोबल प्रोजेक्ट तैयार हो रहा है। रिपोर्ट्स के अनुसार, ऋतिक रोशन 'एनॉनिमस कंटेंट' से जुड़ गए हैं। यह कंपनी हॉलीवुड की कुछ सबसे मशहूर फिल्मों और टेलीविजन शो को बनाने और उन्हें सपोर्ट करने के लिए जानी जाती है। हालांकि, इस एक्टर के किसी हॉलीवुड फिल्म या सीरीज में काम करने के बारे में अभी कोई घोषणा नहीं हुई है, लेकिन इस खबर से फैन्स में उत्साह जरूर बढ़ गया है।

'एनॉनिमस कंटेंट' कई अवॉर्ड जीतने वाले प्रोजेक्ट्स से जुड़ा रहा है, जिनमें द रेवेनेंट, स्पॉटलाइट और 'इटर्नल सनशाइन ऑफ द स्पॉटलेस माइंड' शामिल हैं। अपने पिता राकेश रोशन के डायरेक्शन में बनी फिल्म 'कहो ना प्यार है' से डेब्यू करने के बाद से ही ऋतिक बॉलीवुड के सबसे बड़े स्टार्स में से एक रहे हैं। यह फिल्म जबरदस्त हिट रही और इसने उन्हें रातों-रात स्टार बना दिया। ऋतिक रोशन अपने करियर के सबसे ज्यादा इंतजार किए जाने वाले प्रोजेक्ट्स में से एक, 'कृष 4' में कृष्णा मेहरा के तौर पर वापसी करने की तैयारी कर रहे हैं। वह 'स्टॉर्म' के साथ एक प्रोड्यूसर के तौर पर भी डेब्यू करने वाले हैं; यह एक थ्रिलर फिल्म है जिसे प्राइम वीडियो के लिए बनाया जा रहा है।

सिनेमा के पर्दे पर बागी और बगावत

अशोक जोशी

भारतीय राजनीति में जब भी किसी दल के भीतर असंतोष उभरता है और नेता अपने ही संगठन के खिलाफ खड़े हो जाते हैं, तब मीडिया और जनभाषा में एक शब्द सबसे अधिक सुनाई देता है 'बागी'। यह शब्द केवल राजनीति तक सीमित नहीं है।

समाज, इतिहास, प्रेम और सिनेमा हर क्षेत्र में बागी और बगावत की अपनी-अपनी कहानियां रही हैं। सिनेमा ने भी इस भाव को अनेक रूपों में चित्रित किया है। कभी किसी राज्य के विरुद्ध उठी तलवार के रूप में, कभी प्रेम के लिए समाज से टकराने वाले युवक-युवती के रूप में और कभी अन्याय के खिलाफ खड़े हुए नायक के रूप में।

बागी और बगावत ऐसे शब्द हैं जिनका संबंध किसी स्थापित व्यवस्था, सत्ता या सामाजिक मान्यता के विरुद्ध खड़े होने से है। जब कोई व्यक्ति या समूह विद्रोह करता है तो उसे बगावत कहा जाता है और ऐसा करने वाला बागी कहलाता है। इतिहास में कभी प्रजा ने अत्याचारी शासक के खिलाफ बगावत की, तो कभी किसी महत्वाकांक्षी सेनापति ने सत्ता हथियाने के लिए अपने राजा के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। कई बार समाज की रूढ़ियों के खिलाफ आवाज उठाने वाला व्यक्ति भी बागी माना गया। आज राजनीति का स्वरूप बदल चुका है। अब बगावत तलवारों और सेनाओं से नहीं, बल्कि संख्या बल और राजनीतिक समीकरणों से होती है। सत्ता पक्ष के भीतर का कोई गुट ही नेतृत्व के खिलाफ खड़ा होकर सरकार गिराने या बदलने की कोशिश करता है। कभी यह बगावत असफल हो जाती है तो कभी सत्ता परिवर्तन का कारण बन जाती है। लेकिन बगावत केवल राजनीति तक सीमित नहीं है। प्रेम में भी लोग परिवार और समाज के विरुद्ध खड़े होकर बागी बनते रहे हैं। इसलिए कहा जा सकता है कि किसी न किसी रूप में बागी और बगावत का खेल हमेशा समाज में मौजूद रहा है।

यही कारण है कि सिनेमा ने भी इस विषय को बार-बार अपनाया। जब फिल्मों में राजाओं, रानियों और काल्पनिक राज्यों की कहानियाँ बनती थीं, तब बगावत का अर्थ अक्सर किसी राज्य के खिलाफ विद्रोह होता था। बाद में जब प्रेम-कथाएँ प्रमुख हुईं, तब प्रेमी-प्रेमिका समाज की बंदिशों के विरुद्ध बागी बनकर सामने आने लगे। प्रेम और विद्रोह का यह मेल हिंदी फिल्मों की सबसे लोकप्रिय थीमों में शामिल रहा। आश्चर्य की बात यह है कि फिल्मों की कहानियों में बगावत के इतने प्रसंग होने के बावजूद 'बागी' और 'बगावत' जैसे शीर्षकों का उपयोग अपेक्षाकृत कम हुआ। 'बगावत' शीर्षक से केवल एक फिल्म बनी, जबकि 'बागी' नाम का प्रयोग कई बार किया गया।

हिंदी सिनेमा में 'बागी' शीर्षक की पहली उल्लेखनीय फिल्म 1953 में आई थी। इसमें फैंटेसी फिल्मों के लोकप्रिय नायक रंजन और नसीम बानो प्रमुख भूमिकाओं में थे, जबकि प्राण खलनायक की भूमिका में दिखाई दिए थे। कहानी एक ऐसे व्यक्ति की थी जो राज्य पर कब्जा करने के लिए बगावत करता है, लेकिन अंततः एक सच्चा बागी उसे पराजित कर राज्य और राजकुमारी दोनों को प्राप्त कर लेता है। फिल्म में मुकरी, अनवर हुसैन, शम्मी और बी.एम. व्यास भी थे। मजरूह सुल्तानपुरी के गीत और मदन मोहन का संगीत इसकी विशेषता थे। इसका गीत 'हमारे बाद दुनिया में हमारे अफसाने जवां होंगे' काफी लोकप्रिय हुआ था।

इसके पांच वर्ष बाद रंजन एक बार फिर 'बागी सिपाही' में दिखाई दिए। मधुबाला उनकी नायिका थीं। भगवानदास वर्मा द्वारा निर्देशित इस फिल्म में चन्द्रशेखर और निशी भी थे। शंकर-जयकिशन के संगीत से सजी यह फिल्म रोमन शासक नीरो की कथा से प्रेरित थी। उस दौर की अधिकांश फैंटेसी फिल्मों में एक समान कथानक देखने को मिलता था। कोई क्रूर सेनापति या मंत्री सीधे-सादे राजा के विरुद्ध विद्रोह कर सत्ता हथिया लेता था और फिर कोई नायक उसके खिलाफ संघर्ष करता था। जीवन, अनवर हुसैन, तिवारी, हीरालाल और बी.एम. व्यास जैसे कलाकारों ने ऐसे विद्रोही पात्रों को बार-बार पर्दे पर जीवंत किया। बाद के वर्षों में प्राण और प्रेम चोपड़ा ने भी सत्ता और स्वार्थ के लिए बगावत करने वाले पात्रों को यादगार बनाया।

1964 में एक और 'बागी' फिल्म प्रदर्शित हुई। इसमें

जीवन एक क्रूर सेनापति की भूमिका में थे। कहानी में उनके रथ से एक बच्चे की मृत्यु हो जाती है और प्रतिशोध की भावना से प्रेरित होकर उसका पिता सेनापति के पुत्र को ही उसके विरुद्ध बागी बना देता है। प्रदीप कुमार, विद्या चौधरी और मुमताज अभिनीत इस फिल्म का निर्देशन रामदयाल ने किया था तथा संगीत चित्रगुप्त का था। हालांकि यह फिल्म दर्शकों के बीच विशेष प्रभाव नहीं छोड़ सकी। इसके बाद बागी शहजादा, बागी हसीना, बागी सुल्ताना और 'बागी लुटेरा' जैसी फिल्में भी आईं, लेकिन इनमें से कोई भी उल्लेखनीय सफलता हासिल नहीं कर सकी। इनमें से अधिकांश फिल्में फैंटेसी या स्टंट शैली की थीं और सीमित दर्शक वर्ग तक ही पहुंच सकीं।

प्रेम में बगावत का विषय हिन्दी सिनेमा का सबसे लोकप्रिय रूप रहा है। इस संदर्भ में 'मुगल-ए-आजम' का नाम सबसे पहले लिया जाएगा। सलीम और अनारकली की प्रेमकथा में प्रेम स्वयं बगावत बन जाता है। फिल्म का संवाद 'यदि प्यार करना बगावत है तो समझ लीजिए सलीम बागी हो गया' आज भी दर्शकों की स्मृति में दर्ज है। दर्शकों ने इस प्रेम-विद्रोह को भरपूर समर्थन दिया और फिल्म भारतीय सिनेमा की अमर कृति बन गई। इसके बाद 'बॉबी' ने सामाजिक और आर्थिक वर्ग भेद के विरुद्ध प्रेम की बगावत को प्रस्तुत किया। राज कपूर की इस फिल्म में दो युवा प्रेमियों का विद्रोह नई पीढ़ी की आवाज बन गया। वहीं 'एक दूजे के लिए' में कमल हासन और रति अग्निहोत्री ने ऐसे प्रेमियों की भूमिका निभाई जो परिवार और समाज की अस्वीकृति के सामने टूट जाते हैं। इस फिल्म का दुखांत अंत दर्शकों को गहराई तक प्रभावित कर गया।

देश की स्वतंत्रता के लिए लड़े गए संघर्ष को भी अंग्रेजों ने बगावत कहा था, लेकिन भारतीय दृष्टि में वह क्रांति थी। यही कारण है कि स्वतंत्रता सेनानियों पर बनी फिल्मों के शीर्षकों में क्रांति, क्रांतिवीर और 'शहीद' जैसे शब्द अधिक दिखाई देते हैं। इसी तरह चंबल के बीहड़ों में अत्याचार और अन्याय के विरुद्ध हथियार उठाने वाले लोगों को भी अक्सर 'बागी' कहा जाता था। हालांकि बैंडिट क्वीन, पान सिंह तोमर और 'पुतलीबाई' जैसी फिल्मों में बागी जीवन की कहानियाँ थीं, लेकिन शीर्षकों में 'बागी' शब्द नहीं था। नब्बे के दशक में सलमान खान ने 'बागी' शीर्षक को फिर से लोकप्रिय बनाया। इस फिल्म में उनके साथ नगमा ने अभिनय किया था। प्रेम और संघर्ष से जुड़ी इस कहानी ने युवा दर्शकों को आकर्षित किया।

बाद के वर्षों में टाइगर श्रॉफ ने 'बागी' शीर्षक को लगभग अपनी पहचान बना लिया। बागी, बागी 2, बागी 3 और 'बागी 4' तक यह श्रृंखला जारी रही। इन फिल्मों में पारंपरिक विद्रोह की जगह एक्शन, व्यक्तिगत संघर्ष और आधुनिक नायकत्व ने ले ली। दरअसल, बागी और बगावत केवल शब्द नहीं हैं, बल्कि मानवीय स्वभाव की अभिव्यक्ति हैं। कभी वे सत्ता के खिलाफ खड़े होते हैं, कभी अन्याय के विरुद्ध और कभी प्रेम के पक्ष में। राजनीति में बागियों का सिलसिला चलता रहेगा और सिनेमा भी उनसे प्रेरणा लेता रहेगा। इसलिए जब तक समाज में विरोध, संघर्ष, प्रेम और परिवर्तन की आकांक्षा बनी रहेगी, तब तक पर्दे पर भी बागी और बगावत के दृश्य दिखाई देते रहेंगे।

वॉलीबॉल को... फुटबॉल बना दिया हमने !

प्रकाश पुरोहित

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

विश्व कप में हर बार खेलने वाले देशों की गिनती बढ़ती जा रही है और हम कहीं नजर नहीं आते हैं। विश्व गुरु बनने में यह सबसे बड़ी रुकावट है। बाकी जगह तो हम इतिहास बदल चुके हैं, लेकिन फुटबॉल में ठोकर खाए जा रहे हैं।

सबसे पहली बात तो मुझे यही लगती है कि हमने फुटबॉल को समझने में गड़बड़ कर दी। खेल को सीखने में लगे रहे और उसका साहित्य कभी नहीं पढ़ा। जानने की कोशिश ही नहीं की, कि फुटबॉल है क्या बला !

जब भी मोहल्ले की गटर में गंदगी भर जाती है या नल से पानी नहीं आता है या सड़क की बत्ती गुल होती है या होता है, खेल के मैदान तो क्या टीवी पर भी उतना नजर नहीं आता होगा। आश्चर्य कि फुटबॉल के नेशनल खिलाड़ी भी अपनी समस्या बताते हुए यही कहते हैं कि हमें क्या फुटबॉल समझ रखा है?

फुटबॉल का मतलब तो वर्तमान पोप लियो ने समझाया है कि जब गेंद हमारे पास है और गोल करने का मौका है तो पास वाले को पास देना चाहिए। फुटबॉल अपने पैरों में है और साथ चल रहे खिलाड़ी को पास देना, उसपर भरोसा करना है।

बेसिक ही गलत समझाया गया है हमें... कि फुटबॉल नहीं हुई, बम हो गया कि मौका मिलते ही (और न मिले तो भी) पास वाले को दे मारें। फुटबॉल का यह मतलब भी नहीं है कि नजदीक आए तो परे धकेल दें। दुनिया के श्रेष्ठ फुटबॉल खिलाड़ियों की यही खासियत (या हमारी नजर में खसलत) रही है कि चकमा देकर फुटबॉल को ज्यादा से ज्यादा समय अपने पास रखें और गोल तक ले जाएं।

फुटबॉलर का गेंद से मोह होता है... वह कोई समस्या, मुश्किल या आफत नहीं है कि पिंड छुड़ाया जाए। उस

हमने फुटबॉल को समझने में गड़बड़ कर दी। खेल को सीखने में लगे रहे और उसका साहित्य कभी नहीं पढ़ा। जानने की कोशिश ही नहीं की, कि फुटबॉल है क्या बला ! जब भी मोहल्ले की गटर में गंदगी भर जाती है या नल से पानी नहीं आता है या सड़क की बत्ती गुल होती है या चोरों का पसंदीदा इलाका हो जाता है तो सीधे दरोगा से शिकायत करते हैं। वह नहीं सुनेगा, तय है, तो फिर हम पार्षद के पास जाएंगे।

चोरों का पसंदीदा इलाका हो जाता है तो सीधे दरोगा से शिकायत करते हैं। वह नहीं सुनेगा, तय है, तो फिर हम पार्षद के पास जाएंगे। उसकी महापौर से पटती नहीं कि मंत्री का पट्ठा है।

...तो अब विधायक से कहेंगे... वह भी हाथऊंचे कर देगा कि पार्षद जाने। सांसद तो रेल और एयरोप्लेन के मामले में उलझे रहते हैं, फिर भी उनसे शिकायत करते हैं तो अगले बजट का भरोसा दिला देते हैं। यानी जहां भी जाएं... अगले के माथे पर ठीकरा फोड़ने की सलाह देता है।

ऐसे ही मुश्किल समय में हमें फुटबॉल की याद आती है कि समस्या, मुश्किल और परेशानी को ये सरकारी और अ-सरकारी लोग कैसे फुटबॉल बना देते हैं। जिसने ढंग से कभी फुटबॉल देखी भी ना हो, कह देता है यहां से वहां दौड़ा रहे हो... क्या हमें फुटबॉल बना रखा है?

यह संवाद सदियों से भारत का अपना रहा है तो सुनने वाला भी सफाई तो देने लगता है, लेकिन यह नहीं पूछता कि तुम्हारे घर के पिछवाड़े की सीवर-लाइन चौक होने का इस फुटबॉल से क्या लेना-देना है। न शिकायत को फुटबॉल पता है और ना ही जवाब को मालूम है कि फुटबॉल किस चिड़िया का नाम है !

हमारे यहां बातों में जितनी बार फुटबॉल का जिक्र खिलाड़ी से पूछे, जो गोल मुहाने पर पहुंच कर पास वाले साथी को मजबूरी में इसलिए पास देता है कि उसका %हेडर% गोल कर सकता है।

हम यदि फुटबॉल से मोहब्बत ही नहीं करेंगे तो फीफा की लिस्ट में अपना नाम नीचे ही तलाशते रहेंगे। गलती फुटबॉल संगठन या खिलाड़ियों की नहीं है, उन भाषाशास्त्रियों की है, जिन्होंने बगैर सोचे-समझे फुटबॉल को गलत ढंग से पेश कर दिया। यदि फुटबॉल से छिटकते रहे तो गोल क्या... खाक कर पाएंगे !

हां, मुझे लगता है, जिसने भी यह मुहावरा बनाया होगा, उसे फुटबॉल और वॉलीबॉल का फर्क पता नहीं होगा, क्योंकि वॉलीबॉल ही है... कि आई नहीं कि उस पार धकेल दिया। वॉलीबॉल को यदि हाथ में रख लिया जाए तो फाऊल हो जाएगा। वॉलीबॉल की तो नियति है कि साधु-संन्यासी की तरह कहीं भी ठहरना नहीं है... तो फिर फुटबॉल को क्यों बदनाम किया गया... आज भी किया जा रहा है! यदि हमें विश्व कप (जीतने के लिए तो सौ साल भी कम है) में खेलना है तो फुटबॉल से मोहब्बत करना होगी। वैसे ही जैसे कि पहले जमाने के नेता... किसी समस्या को हाथ लगाते थे... तो फिर हल करके ही छोड़ते थे, आज की तरह फुटबॉल नहीं बनाते थे !

विश्व रक्तदाता दिवस: मानवता का सच्चा धर्म

...और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

विश्व में 14 जून को विश्व रक्तदाता दिवस मनाया जाता है इसी दिन रक्त समूह की खोज करने वाले वैज्ञानिक कार्ल लैंडीस्टीनर का जन्म हुआ था।

दरअसल हमें जानना होगा कि रक्त है क्या? बहुत से लोग जानते नहीं है कि रक्त एक ऊतक यी टिश्यू है। रक्त का कार्य हम सभी जानते हैं कि सभी अंगों तक ऑक्सीजन, पोषक तत्व और हार्मोन पहुँचाना तथा अपशिष्ट पदार्थों को बाहर निकालना है। रक्त के मुख्य चार घटक हैं- आरबीसी (लाल रक्त कणिकायें जो ऑक्सीजन का परिवहन करती है), डब्ल्यूबीसी (श्वेत रक्त कणिकायें जो रोगों से रक्षा करती है), प्लेटलेट्स जो रक्त का थक्का बनने में मदद करती हैं और प्लाज्मा यानी रक्त का तरल भाग जो पोषक तत्वों और हार्मोनों का परिवहन करता है।

अब हम ब्लड ग्रुप के बारे में भी जान लें। ये है- ए, बी, एबी, ओ। इसमें आरएच फैक्टर होता है जो पॉजिटिव या निगेटिव हो सकता है (जो दुर्लभ की श्रेणी में आता है) जैसे ए पॉजिटिव, बी निगेटिव, एबी। ओ निगेटिव को सार्वभौमिक रक्तदाता कहा जाता है जो किसी भी ग्रुप को रक्त दे सकता है और एबी पॉजिटिव सार्वभौमिक रक्तग्राही कहलाता है जो सभी समूह से रक्त ग्रहण कर सकता है।

डॉ. अनिता गुलाटी कहती हैं रक्तदान करना किसी का जीवन बचाने का सबसे अच्छा अवसर है। रक्त दान करने से नई रक्त कोशिकाओं के निर्माण में वृद्धि होती है। ये सरल सुरक्षित प्रक्रिया है। रक्तदान करने के लिए रक्तदाता की आयु 18 से 65 वर्ष के बीच होनी चाहिए। वजन कम से कम 45 से 50 किलोग्राम होना चाहिये। रक्तदान से पहले पर्याप्त पानी और भोजन लेना चाहिए। रक्तदान के बाद थोड़ी देर विश्राम करना चाहिए। रक्तदान करने से किसी प्रकार की कमजोरी नहीं आती है। बल्कि हर तीन महीने के अंतर से रक्तदान करने से रक्त शुद्ध होता है।

कुछ विशेष बीमारियों से जैसे एक जेनेटिक विकार थैलेसीमिया में शरीर पर्याप्त मात्रा में हीमोग्लोबिन नहीं बना पाता जिससे आरबीसी जल्दी नष्ट हो जाती है और खून की कमी (एनीमिया) की समस्या हो जाती है जिससे थकान, कमजोरी, चिड़चिड़ापन, त्वचा का पीला होना, स्प्लीन और लिवर का आकार बढ़ना, सिर, चेहरे की हड्डियों का आकार असामान्य होना शामिल हैं। ऐसे मरीज को कुछ हफ्तों में बाहर से खून देने की आवश्यकता होती है, इसलिये शादी से पहले रक्त जांच करानी चाहिये अन्यथा बच्चे में थैलेसीमिया की समस्या हो सकती है।

दूसरी बीमारी जिसमें रक्त का थक्का नहीं बनता जिसे हीमोफीलिया कहते हैं। ये भी आनुवांशिक रोग है। इसमें शरीर में थक्का बनाने की क्षमता पर्याप्त मात्रा में नहीं होती है। इसके लिये शरीर को विटामिन 'के' की आवश्यकता होती है। प्लेटलेट्स भी पर्याप्त संख्या में होना चाहिए। लंबे समय तक ब्लड थिनर लेना, ऑटोइम्यून बीमारी या लंबे समय तक एंटीबॉयोटिक लेना भी इसका कारण हो सकता है।

जब किडनी खराब हो जाती है तब डायलिसिस किया जाता है या डेंगू, मलेरिया में जब रक्त की भारी कमी, रक्त में टॉक्सिन, सांस फूलना, उल्टी आना, मिनरल की कमी, अनियंत्रित ब्लडप्रेशर, शुगर हो तब भी रक्त की आवश्यकता होती है। डायलिसिस में मशीन द्वारा खराब रक्त को बाहर निकालकर साफ किया जाता है पुनः ब्लड डाला जाता है।

जाने कितने लोगों को रोज रक्त की आवश्यकता पड़ती है। अस्पताल में विपत्ति के समय रक्त मिल सके, इसके लिये समय-समय पर स्वस्थ लोग अगर रक्तदान करते रहें तो इस भागा दौड़ी से बचा जा सकेगा। खास तौर से नेगेटिव ब्लड ग्रुप वालों को रक्तदान ज़रूर करना चाहिये। रक्तदान ने केवल दूसरों के लिये लाभकारी है। बल्कि समाज में आपका बड़ा योगदान है। रक्तदान करें, जीवन बचायें, मानवता का सच्चा धर्म निभायें। रक्तदान करें और मुस्कुराते हुये पूछे, और क्या कह रही है ज़िंदगी?

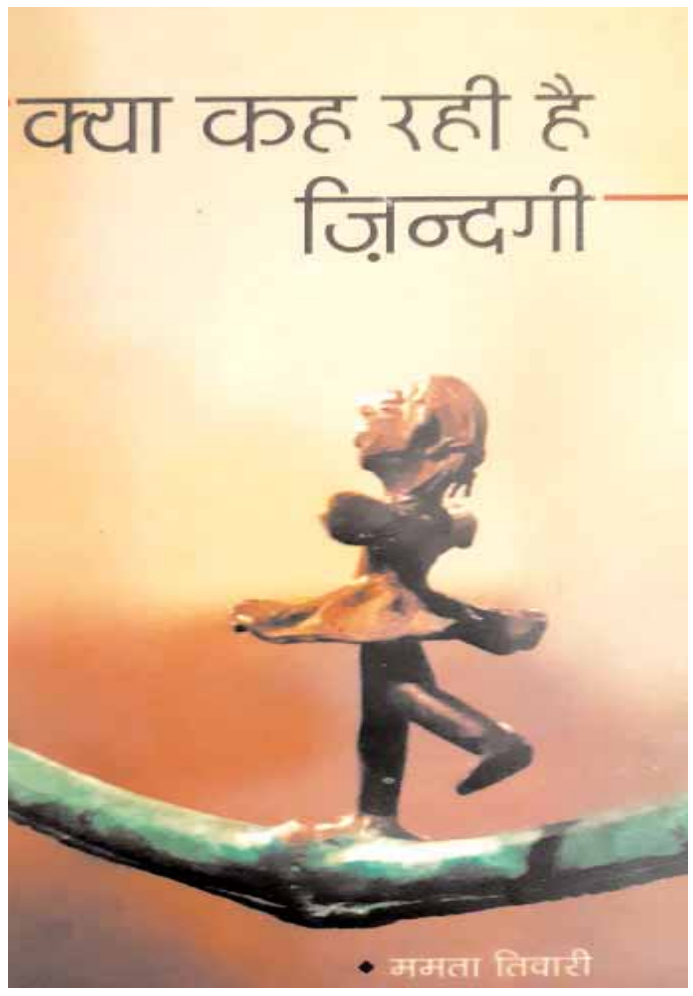

नया दौर... तांगा बनाम कार

फोटो: बंसीलाल परमार

खेल ही खिला सकता है फूल !

दृष्टिकोण

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

किसी भी वर्ल्ड कप मैच के लिए चालीस बरस पहले खेले मैच की बराबरी नामुमकिन है। इंग्लैंड और अर्जेंटीना विश्व कप के क्वार्टर फाइनल (1986) में आमने- सामने थे। उस मुकाबले में किए दो गोल यादगार थे। बात हो रही है मैराडोना के 'हैंड ऑफ गॉड' गोल और उस मैच की, जिसने शोहरत के साथ बदनामी भी पाई।

इस बरस कॉन फिल्म फेस्टिवल में फिल्म 'द मैच' दिखाई, जिसमें ढाई सौ बरस पहले से आज तक हर उस बात को परखा है, जिसका ताल्लुक दो देशों और टीम से था और रहेगा। फीफा विश्व कप (1986) में इंग्लैंड के खिलाफ अर्जेंटीना के मैराडोना के 'द हैंड ऑफ गॉड' गोल को गलत माना जाना था, लेकिन जो हुआ, उसने जादुई खेल के पल दिए। 'द मैच' सिर्फ इस गोल, मैच से पहले की राजनीति और बातचीत पर भी है।

इस क्वार्टर फाइनल में दो बड़े खिलाड़ी थे- इंग्लैंड के गैरी लिनेकर और 2 अर्जेंटीना के मैराडोना। कुछ बरस पहले ही ब्रिटेन फॉकलैंड आइलैंड्स पर अर्जेंटीना से युद्ध कर चुका था। मैराडोना ने मैच से पहले कहा- 'यह सिर्फ फुटबॉल है। बस।' जहां मैच खेला था, वहां राजनीतिक धुंध छाई थी। फिल्म के दोनों डायरेक्टर अर्जेंटीना के हैं, पर कहानी में

बीच का रास्ता है। दोनों टीम के सदस्यों का इंटरव्यू लेते हैं, जिसमें लिनेकर भी हैं (मैराडोना की 2020 में मौत हो गई)।

फेस्टिवल में फिल्म 'द मैच' दिखाई, जिसमें ढाई सौ बरस पहले से आज तक हर उस बात को परखा है, जिसका ताल्लुक दो देशों और टीम से था और रहेगा। फीफा विश्व कप (1986) में इंग्लैंड के खिलाफ अर्जेंटीना के मैराडोना के 'द हैंड ऑफ गॉड' गोल को गलत माना जाना था, लेकिन जो हुआ, उसने जादुई खेल के पल दिए। 'द मैच' सिर्फ इस गोल, मैच से पहले की राजनीति और बातचीत पर भी है इस क्वार्टर फाइनल में दो बड़े खिलाड़ी थे- इंग्लैंड के गैरी लिनेकर और 2 अर्जेंटीना के मैराडोना।

'द मैच' में मैराडोना बड़ी जगह रखते हैं, लेकिन जैसे फुटबॉल टीम खेल है, वैसे ही फिल्म भी टीम-वर्क है, जो ऑस्कर रग्गेरी,

पीटर शिल्टन, जॉन बार्न्स, जॉर्ज बुरुचागा, रिकार्डो गिउस्टी और जूलियो ओलार्टिकोएचिया के साथ-साथ लिनेकर और वाल्डानो की यादों पर है।

खेल दोस्ती बना सकता है, साथ ला सकता है और सच्ची खुशी दे सकता है। दुनिया में जो हो रहा है, उस तनाव से खेल ही बाहर निकाल सकता है। जंग हो, जिंदगी की परेशानी हो, खेल उन रुकावटों को दूर कर सकता है। हालात और फर्क को इस तरह जोड़ता है, जो कम चीजें ही कर सकती हैं।

'द मैच' दिखाती है कि खेल-या फुटबॉल सिर्फ खेल नहीं होता, यह हालात जोड़ सकता है। जिस हालत में यह है, उसे कभी नहीं भूलना चाहिए। वर्ल्ड कप से पहले इसे देखना खास तौर पर दिल को छू लेने वाला है। दुनिया में गड़बड़ है, जंग सभी का ध्यान खींच रही है और फिर वर्ल्ड कप ! यह उन में से है, जो लाखों लोगों को साथ ला सकती है, चाहे उनका धर्म, भाषा, खानपान कुछ भी हो।

इस दौर में जब कोई फुटबॉल का मैच दुनिया को ठीक नहीं कर सकता तो साथ बिताया समय, साझा अनुभव ही अगली सबसे अच्छी चीज हो सकती है।